हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार 10 मई 2026

11 उपचुनाव को लेकर प्रशासन अलर्ट, मतदान आज

12 एनडीए परीक्षा में छाए जिले के होनहार विद्यार्थी

खबर संक्षेप

सेक्टर 3 में फंदा लगाने से प्रवासी की मौत

बहादुरगढ़। सेक्टर-3 में स्थित एक कंस्ट्रक्शन साइट पर प्रवासी व्यक्ति का शव फंदे पर लटकता हुआ मिला। आत्महत्या किए जाने की बात सामने आई है। पुलिस ने पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिया है। घटना को संयोग मानकर कार्रवाई की गई है। मृतक की पहचान करीब 34 वर्षीय रामू के रूप में हुई है। मूल रूप से उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले से था और यहां सराय औरंगाबाद में रह रहा था। दिहाड़ी मजदूरी करता था। शनिवार की सुबह सेक्टर-3 की एक कंस्ट्रक्शन साइट पर उसका शव फंदे पर लटका मिला।

जानलेवा हमले के केस में एक गिरफ्तार

झज्जर। जानलेवा हमला करने मामले में पुलिस की एक टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। थाना प्रभारी बेरी उप निरीक्षक विनोद ने बताया कि जयभगवान निवासी गोच्छी की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया था। मामले में कार्रवाई करते हुए उप निरीक्षक राजेश कुमार की टीम द्वारा एक आरोपी को पकड़ा गया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान विजय निवासी गोच्छी के तौर पर की गई है। आरोपी के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

पंजाबी धर्मशाला में सुंदरकांड पाठ 17 को

झज्जर। सती भाई साईं दास सेवा दल द्वारा आगामी 17 मई को शहर की पंजाबी धर्मशाला में 25वें वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। कलानौर गद्दी के महंत रामसुखदास महाराज के सानिध्य में होने वाले इस कार्यक्रम के अंतर्गत महावीर मंडली बहादुरगढ़ द्वारा संगीतमय सुंदरकांड की प्रस्तुति दी जाएगी। इसके उपरांत महंत रामसुखदास महाराज प्रवचन देंगे। आयोजक समिति सदस्य वासुदेव भुटानी ने बताया कि वार्षिकोत्सव के अंतर्गत जहां जिला रेडक्रॉस सोसायटी के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा।

बरसात व ओलावृष्टि के बाद फिर बढ़ा तापमान

बहादुरगढ़। चंद दिनों पहले हुई बरसात व ओलावृष्टि से तापमान काफी नीचे चला गया था, लेकिन अब धीरे-धीरे फिर से बढ़ रहा है। शनिवार को अधिकतम तापमान 37 डिग्री पर चला गया, जो शुक्रवार की अपेक्षा तीन डिग्री अधिक था। कुछ दिन पहले बरसात से तापमान घटकर 30 डिग्री तक पहुंच गया था। अब शनिवार को अधिकतम तापमान 37 डिग्री पहुंच गया। आगामी दिनों में तापमान तेजी से बढ़ेगा और 16 मई के बाद तो 45 पार होने के आसार हैं।

सीताराम गेट

9वें दिन भी चली सफाई कर्मियों की हड़ताल, कूड़ा उठाने के नहीं इंतजाम

शासन और प्रशासन फेल आग लगा निपटाया कूड़ा

प्रशासन कूड़ा उठवाने के लिए नहीं कर रहा कोई प्रयास

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

शहर में सफाई व्यवस्था की बदहाली अब लोगों के लिए बड़ी परेशानी बनती जा रही है। शहर के प्रमुख चौक चौराहों व सड़कों के बीचों-बीच तक कूड़े के ढेर फैले हुए हैं, जिससे राहगीरों और वाहन चालकों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। हालात इतने खराब हो चुके हैं कि लोग कूड़े के ढेर में खुद ही आग लगाकर उसका निस्तारण करने लगे हैं। इससे जहरीला धुआं फैल रहा है और लोगों का सांस लेना तक मुश्किल हो गया है। शहर के गली, मोहल्लों और बाजारों में भी कूड़ा जमा होने के कारण बदबू और गंदगी का माहौल बना हुआ है। लोगों का कहना है कि सफाई कर्मचारियों और सरकार की लड़ाई का खामियाजा हजारों लोगों को भुगतना पड़ रहा है।

सफाई कर्मचारियों ने थाली बजाकर किया विरोध

बहादुरगढ़। मांगों को लेकर नगर परिषद के सफाई कर्मचारियों की हड़ताल जारी है। हड़ताल के नौवें दिन शनिवार को कर्मचारियों शहर में थाली बजाकर विरोध जताया। नगर परिषद के गेट से यह प्रदर्शन शुरू हुआ। रोहतक रोड, कबीर बस्ती, रेलवे रोड से होते हुए वापस नगर परिषद में आकर संपन्न हुआ। प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों ने सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि लंबे समय से मांग उठा रहे हैं लेकिन सरकार सुनवाई नहीं कर रही। हमारी तमाम मांग जायज हैं और जब तक पूरी नहीं होती, तब तक विरोध जारी रहेगा। जरूरत पड़ी तो इस आंदोलन को और तेज किया जाएगा। उधर, दूसरी तरफ हड़ताल के चलते पूरा शहर गंदगी से सड़ रहा है। कोई ऐसी गली, सड़क नहीं जहां गंदगी के ढेर न हों। स्मारक स्थलों के आसपास भी गंदगी के ढेर लगे हैं। हालात ये हैं कि जगह जगह कचरे के ढेरों को आग के हवाले किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में प्रदूषण की समस्या के साथ साथ बीमारी फैलने की भी आशंका बनी हुई है।

झज्जर। नगरपरिषद परिसर में हड़ताली कर्मचारियों के बीच बैठे इनेलो कार्यकर्ता।

नप परिसर में कर्मचारियों ने किया धरना प्रदर्शन, इनेलो नेताओं ने दिया समर्थन

झज्जर। नगर परिषद के सफाई कर्मचारियों का धरना प्रदर्शन नौवें दिन भी जारी रहा। कर्मचारियों ने नगर परिषद परिसर में धरना प्रदर्शन किया। यूनियन के इकाई प्रधान शिवम चांवरिया ने बताया कि कोर्ट के आदेश के बावजूद दस-दस साल पुराने कर्मचारियों को पक्का नहीं किया जा रहा। उनकी मुख्य मांगों में पुरानी पेंशन बहाली, कच्चे कर्मचारियों को पक्का करना, जब तक पक्का न करें तब तक तीस हजार रुपये न्यूनतम वेतन देना, अग्निशमन विभाग फरीदाबाद में मौत का ग्रास बने कर्मचारी भवीचंद शर्मा और रणबीर को शहीद का दर्जा व आश्रितों को एक-एक करोड़ की आर्थिक सहायता, स्थानीय नगर परिषद के पेरोल कर्मचारी स्वर्गीय राजेश के परिजनों को पचास लाख रुपये मुआवजा व परिवार के एक सदस्य को नौकरी की मांग शामिल है। उधर, हड़ताली कर्मचारियों का इनेलो पार्टी द्वारा भी समर्थन किया गया।

हर मां के संघर्ष को सलाम

बहादुरगढ़। सुबह की पहली किरण के साथ सिर पर ईंटों का बोझ, हाथों में मेहनत की लकीरें और दिल में बच्चों के बेहतर भविष्य का सपना लिए एक मजदूर मां अपने दिन की शुरुआत करती है। उसे शायद यह नहीं पता कि 'मदर्स डे' क्या होता है, लेकिन वह हर दिन अपने बच्चों के लिए त्याग, प्रेम और समर्पण की मिसाल पेश करती है।

बता दें कि मई के दूसरे रविवार को संपूर्ण विश्व में अंतरराष्ट्रीय मातृ दिवस यानी मदर्स-डे धूमधाम के साथ मनाया जाता है।

संबंधित खबरें पेज 12 पर

चांदनी मर्डर केस : परिजनों के विरोधाभाषी बयानों से उलझा केस, अब घायल युवक के अस्पताल से डिस्चार्ज होने का इंतजार

भाई बोला-अभिषेक से बात करने को किया था मना, मां ने कहा - हम शादी के लिए तैयार थे

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

देवीलाल पार्क में हुई चांदनी की हत्या के मामले में अब नया मोड़ आया है। मृतका के परिजनों का कहना है कि वे तो अभिषेक के साथ चांदनी की शादी के लिए राजी थे, लेकिन फिर भी उसने बेटी की हत्या कर दी। जबकि एक दिन पहले हुई एफआईआर में परिजनों ने बयान दिया है कि हमने चांदनी को अभिषेक से बात करने के लिए मना किया था। खैर, असल कारण का खुलासा आरोपी अभिषेक से पूछताछ के बाद हो सकेगा। फिलहाल वह उपचाराधीन है। डिस्चार्ज होने के बाद पुलिस उसे हिरासत में लेगी। दरअसल, शुक्रवार दोपहर को देवीलाल पार्क के साथ गुजर रही माइनर किनारे युवती चांदनी मृत तो युवक अभिषेक घायल अवस्था में मिला था। दोनों की गर्दन तेजधार हथियार से रेती हुई थी। मामले में सामने आया कि फतेहाबाद के अभिषेक की शक्ति नगर की निवासी चांदनी के साथ सोशल मीडिया पर दोस्ती हुई थी। वह उससे मिलने बहादुरगढ़ आया और चांदनी की हत्या के बाद उसने खुद को भी कलाई व गर्दन में चाकू मारकर घायल कर लिया।

उधर, एक दिन पहले हुई एफआईआर में मृतका के भाई अरविंद ने कहा था कि हमने चांदनी को अभिषेक से बातचीत करने के लिए मना किया था। बहरहाल, हत्या की असल वजह फिलहाल राज बनी हुई और इस राज का खुलासा अभिषेक से ही हो सकेगा। उधर, सेक्टर-6 थाना प्रभारी जयभगवान सिंह का कहना है कि अस्पताल से डिस्चार्ज होते ही आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जाएगी। पूछताछ के बाद ही वारदात के बारे में कुछ स्पष्ट कहा जा सकता है।

चांदनी ने 12वीं की दी थी परीक्षा

बहादुरगढ़। अस्पताल में मौजूद मृतका के परिजन।

चांदनी ने हाल ही में 12वीं बोर्ड की परीक्षा दी थी। वह तीन भाई-बहनों में मंझली थी। उसके पिता की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। मां बीना एक निजी अस्पताल में नौकरी कर परिवार का पालन-पोषण कर रही है। बड़ा भाई 12वीं कक्षा में पढ़ता है, जबकि छोटा भाई नौवीं कक्षा का छात्र है। मां बीना का कहना है कि दोनों की शादी के लिए हम तैयार थे। आगामी 20 मई को रिश्ते के संबंध में बात भी होनी थी। फिर भी न जाने क्यों अभिषेक ने हमारी बेटी को मार दिया।

इस साल हत्या के 7 केस आ चुके सामने, दो महिलाओं की शिनाख्त भी नहीं हो पाई

बहादुरगढ़। इलाके में हत्याओं के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। जनवरी से लेकर अब तक 7 हत्याएं सामने आ चुकी हैं, इनमें चार केस महिलाओं के शामिल हैं। दो महिलाओं की तो शिनाख्त तक नहीं हो सकी। हालांकि अधिकांश वारदात पुलिस ने सुलझा ली हैं। गत आठ मई की दोपहर को देवीलाल पार्क के साथ नहर किनारे चांदनी की हत्या उसी के दोस्त अभिषेक ने की। गत 23 अप्रैल को टांडाहेड़ी में घर में घुसने के आरोप में पीट पीटकर कृष्ण की हत्या की गई। अप्रैल माह में ही मांडोठी के राजेंद्र की हत्या लेनदेन के चलते की गई। गत 12 अप्रैल को छोटूराम नगर में जितेंद्र की हत्या पड़ोसी सुमित ने चाकू मारकर की। इससे पहले 24 मार्च को मातन में 30 वर्षीय ममता का शव मिला। साथ रहने वाले युवक ने ही उसको मौत के घाट उतारा था। जबकि 24 फरवरी को रोहद स्थित एनसीआर माइनर में एक महिला का हाथ-पांव बंधा व गर्दन कटा शव बरामद हुआ। इससे पहले 27 जनवरी को सूर्या नगर में महिला का शव सड़ी गली अवस्था में मिला था। हत्या कर खुर्द बुर्द करने के मकसद से शव फेंका गया था। अहम बात ये कि पिछले साल बहादुरगढ़ में कुल 16 हत्याएं हुई थी और इस साल अब तक सात मामले सामने आ चुके हैं। हालांकि दो ब्लाइंड मर्डर को छोड़ दें तो तमाम वारदातें पुलिस सुलझा चुकी हैं।

मुंडाहेड़ा गांव में सर्वजातीय महापंचायत आज

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

हरियाणा विद्युत ऊर्जा निगम में बतौर अकाउंट ऑफिसर कार्यरत बलवंत यादव द्वारा हरियाणा सचिवालय चंडीगढ़ की आठवीं मंजिल से कूद कर आत्महत्या करने के मामले में पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने को लेकर रविवार को उनके पैतृक गांव मुंडाहेड़ा में सर्वजातीय महापंचायत का आयोजन किया जाएगा। यादव महासभा के पूर्व प्रधान वीरेंद्र दरोगा ने बताया कि महापंचायत सुबह दस बजे गांव में आयोजित की जाएगी। जिसकी सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। उन्होंने बताया कि महापंचायत में विभिन्न सामाजिक संगठनों, खाप प्रतिनिधियों, ग्रामीणों और समाज के प्रबुद्धजनों को बुलाया गया है। उन्होंने लोगों से अधिक से अधिक संख्या में महापंचायत में पहुंचने की अपील की है। उन्होंने कहा कि इस मामले में निष्पक्ष कार्रवाई जरूरी है ताकि मृतक को न्याय मिल सके।

बलवंत यादव सुसाइड केस में निष्पक्ष कार्रवाई के लिए समाज हो रहा एकजुट : वीरेंद्र दरोगा

शिकायत बंदर बचाने की, जवाब आया पकड़ने का

- वकील ने सीएमओ को भेजी थी शिकायत, बंदर पकड़ने के दौरान बरती जा रही थी क्रूरता

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

बाईपास स्थित एक हाउसिंग सोसाइटी में बंदर पकड़ने का मामला प्रशासनिक कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट के एक अधिवक्ता ने शिकायत तो बंदर पकड़ने की प्रक्रिया पर एतराज जताते हुए की थी लेकिन निवारण का हवाला देते हुए उन्हें जवाब मिला कि बंदर पकड़ लिए गए हैं, आप संतुष्ट हैं?

दरअसल, पिछले महीने यह मामला सामने आया था। जीव प्रेमियों ने आरोप लगाए गए कि बंदरों को अमानवीय व अवैध तरीके से पकड़कर बोरों में बांधा गया। इसका एक वीडियो भी वायरल हुआ। इस संबंध में जीव प्रेमियों ने पुलिस को शिकायत दी लेकिन जांच के बजाय उनसे ही बोरों में बंदर होने के सुबूत मांग लिए गए। दूसरी ओर, सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता नवीन सिंगल ने एक्स के माध्यम से सीएमओ हरियाणा को शिकायत दर्ज कराई थी। अब करीब एक महीने बाद मुख्यमंत्री शिकायत निवारण कार्यालय से उनको संपर्क किया गया, लेकिन वहां से मिला जवाब चौंकाने वाला था। प्रतिनिधि ने कहा कि बंदर पकड़ लिए गए हैं, आप संतुष्ट हैं? सिंगल ने कहा कि मूल शिकायत बंदरों को पकड़ने की प्रक्रिया और उसकी वैधता को लेकर थी। उनसे इस संबंध में किसी अधिकारी ने संपर्क नहीं किया। इसके बावजूद शिकायत निस्तारण में दर्शाई जा रही है। उन्होंने मांग की कि बंदरों को पकड़ने वालों और इस कार्रवाई को अंजाम देने वालों की जांच कर उचित कार्रवाई की जाए।

ब्रेक

औद्योगिक संगठन के दोनों पक्षों में 70 वोट को लेकर आरोपों का दौर शुरू

वोटर लिस्ट पर आपत्ति से स्थगित हुए बीसीसीआई चुनाव

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

मतदाता सूची पर लगे आक्षेप के बाद 11 मई को प्रस्तावित बहादुरगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (बीसीसीआई) के चुनाव स्थगित कर दिए गए हैं। प्रोग्रेसिव फ्रंट के अनुसार मतदाता सूची में 70 से अधिक संदिग्ध एवं फर्जी मतदाता पाए गए, जबकि कई वास्तविक एवं पात्र औद्योगिक सदस्यों के नाम सूची से गायब हैं। वहीं उद्योग विकास मंच से जुड़े उद्यमियों ने कहा कि प्रोग्रेसिव फ्रंट ने चुनावी हार सामने देख ओछे हथकंडे अपनाकर चुनाव रुकवाया है। दरअसल, मतदाता सूची में गंभीर अनियमितताएं एवं खामियां होने का आरोप लगाते हुए जिला फर्म्स एंड सोसाइटी रजिस्ट्रार के समक्ष औपचारिक शिकायत दी थी। शिकायत का संज्ञान लेते हुए जिला रजिस्ट्रार संजीत कौर कटारिया ने मतदाता सूची की जांच शुरू करवा दी है। साथ ही जांच पूरी होने तथा आगामी आदेशों तक वर्तमान चुनाव प्रक्रिया को स्थगित कर दिया है। संपूर्ण मतदाता सूची की निष्पक्ष एवं विस्तृत जांच सुनिश्चित करने के लिए 4 सदस्यों की एक स्वतंत्र समिति का गठन किया गया है।

बहादुरगढ़। प्रोग्रेसिव फ्रंट के सदस्य चुनावी मुद्दों को उठाते हुए।

मतदाता सूची में गड़बड़ी : प्रोग्रेसिव फ्रंट

प्रोग्रेसिव फ्रंट के प्रवीण गर्ग व विपिन बजाज ने बताया कि मतदाता सूची में गड़बड़ी चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता पर प्रश्नचिह्न लगाती है। उम्मीद है कि आगामी चुनाव पूर्णतः निष्पक्ष, पारदर्शी एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप संपन्न होंगे, जिससे संगठन की गरिमा एवं विश्वसनीयता बनी रहे।

हार देखकर लगाए झूठे आरोप : विकास मंच

उद्योग विकास मंच के सुभाष जग्गा, नरेंद्र छिकारा व विकास आनंद सोनी ने कहा कि बीसीसीआई ने हमेशा उद्यमियों की आवाज बुलंद की है। लेकिन निजी स्वार्थों में डूबे कुछ लोग लगातार संस्था को विवादों में घसीटकर उसकी छवि खराब कर रहे हैं। पूरी चुनाव प्रक्रिया नियमों और पारदर्शिता के तहत चली। गत 10 अप्रैल को निर्वाचन अधिकारी पीके बंसल की नियुक्ति हुई और 13 अप्रैल को बीसीसीआई के सदस्यों की सूची सार्वजनिक कर 15 दिन तक दावे और आपत्तियों का समय दिया गया। तब किसी भी सदस्य ने कोई आपत्ति दर्ज नहीं कराई। लेकिन चुनाव शुरू होते ही उद्योगपतियों का रुझान उद्योग विकास मंच के पक्ष में दिखा तो प्रोग्रेसिव फ्रंट झूठी शिकायतें देकर लगातार विवाद खड़े करने लगा। शिकायत के सभी आरोप बिल्कुल निराधार हैं।

जसोरखेड़ी में राजकीय महिला महाविद्यालय के दीक्षांत समारोह में छात्राओं को बांटीं डिग्रियां

बहादुरगढ़। डिग्री प्राप्त करने वाली छात्राओं के साथ अतिथि व कॉलेज स्टाफ।

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

जसोरखेड़ी के राजकीय महिला महाविद्यालय में तृतीय दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। डॉ. राजेश कुमार ने स्नातक छात्राओं को उपाधियां प्रदान करते हुए निरंतर परिश्रम, अनुशासन एवं आत्मविश्वास के साथ जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने जीवन को नई दिशा दे सकता है तथा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

कॉलेज प्राचार्य डॉ. संदीप कुमार ने मुख्य अतिथि डॉ. राजेश कुमार का स्वागत किया। कॉलेज रजिस्ट्रार अनिल कुमार एवं आईक्यूएसी समिति की देखरेख में संपन्न हुए समारोह का मंच संचालन डॉ. सुनैना द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में आईक्यूएसी प्रभारी डॉ. प्रियंका अग्रवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया। समारोह के सफल आयोजन में डॉ. सुनील, डॉ. पूनम, डॉ. सुनील कुमार, मनजीत कुमार व लक्ष्मी आदि का विशेष सहयोग रहा।

आईटीआर रिटर्न भरते समय बरतें सावधानी, छोटी गलती भी भारी

बिजनेस डेस्क

आयकर रिटर्न (आईटीआर) फाइल करना आज के डिजिटल दौर में पहले की तुलना में काफी आसान हो गया है, लेकिन इसमें लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं है। हर साल बड़ी संख्या में लोग खुद ही ऑनलाइन आईटीआर भरते हैं, फिर भी छोटी-छोटी गलतियों के कारण उनका रिटर्न अटक जाता है या उन्हें इनकम टैक्स विभाग से नोटिस मिल जाता है। कई बार लोग गलत फॉर्म चुन लेते हैं, तो कभी अपनी आय की पूरी जानकारी नहीं देते। वहीं, कुछ करदाता रिटर्न भरने के बाद उसका ई-वेरिफिकेशन करना ही भूल जाते हैं, जिससे पूरी प्रक्रिया अधूरी रह जाती है। इसके अलावा पर्सनल डिटेल्स में त्रुटि, टैक्स रिजीम का गलत चयन या फॉर्म 26एएस और एआईएस से मिलान न करना भी भारी पड़ सकता है। इसलिए जरूरी है कि आईटीआर फाइल करते समय हर स्टेप को समझदारी और सावधानी के साथ पूरा किया जाए, ताकि किसी भी तरह की परेशानी से बचा जा सके।

सही फॉर्म का चयन पहली शर्त

■ आईटीआर फाइलिंग की प्रक्रिया में सबसे अहम कदम है सही फॉर्म का चुनाव।
■ आईटीआर-1 उन व्यक्तियों के लिए है जिनकी आय सैलरी, एक मकान और अन्य स्रोतों से होती है।
■ आईटीआर-2 उन लोगों के लिए है जिनकी बिजनेस इनकम नहीं है, लेकिन अन्य स्रोतों से आय है।
■ आईटीआर-3 बिजनेस या प्रोफेशन से जुड़े लोगों के लिए होता है।
■ आईटीआर-4 अनुमानित आय वालों के लिए है।
■ गलत फॉर्म चुनने से आपका रिटर्न रिजेक्ट हो सकता है या प्रोसेस में देरी हो सकती है।

ई-वेरिफिकेशन भूलना पड़ सकता है भारी

आईटीआर फाइल करने के बाद सबसे बड़ी गलती जो लोग करते हैं, वह है उसे वेरिफाई न करना। अगर आपने 30 दिनों के भीतर अपने रिटर्न को ई-वेरिफाई नहीं किया, तो इसे मान्य नहीं माना जाएगा। आप नेट बैंकिंग, आधार ओटीपी या ईवीसी के जरिए आसानी से वेरिफिकेशन कर सकते हैं।

पर्सनल डिटेल्स में गलती रोक सकती है रिफंड

■ नाम, पता, पैन, मोबाइल नंबर, जन्मतिथि या असेसमेंट ईयर जैसी जानकारी में छोटी सी गलती भी आपके रिफंड को रोक सकती है।
■ इसलिए फॉर्म भरते समय हर जानकारी को दोबारा जांचना बेहद जरूरी है।
■ साथ ही टैक्स रिजीम (पुरानी या नई) का गलत चयन भी आपकी टैक्स देनदारी को प्रभावित कर सकता है।
■ पूरी आय का खुलासा करना जरूरी
■ -कई करदाता सिर्फ सैलरी इनकम ही दिखाते हैं और अन्य स्रोतों को नजरअंदाज कर देते हैं।

आईटीआर में हर तरह की आय दिखाएं

■ बैंक ब्याज ■ किराया ■ कैपिटल गेन■ अन्य आय
■ यहां तक कि टैक्स फ्री आय को भी दिखाना चाहिए, ताकि आप सही तरीके से छूट का दावा कर सकें।

26एएस और एआईएस से जरूर करें मिलान

■ आईटीआर भरते समय फॉर्म 26एएस और एनुएल इंफोर्मेशन स्टेटमेंट (एआईएस) का मिलान जरूरी है।
■ इनमें आपके टीडीएस, टीसीएस और एडवांस टैक्स की पूरी जानकारी होती है।
■ अगर जानकारी और इन रिकॉर्ड्स में अंतर पाया गया, तो रिफंड अटक सकता है या नोटिस मिल सकता है
■ अगर आपने एक वित्त वर्ष में एक से अधिक कंपनियों में काम किया है, तो हर कंपनी से फॉर्म 16 लेना जरूरी है। ऐसा न करने पर आपकी कुल आय गलत दिख सकती है और टैक्स कैलकुलेशन भी प्रभावित हो सकता है।

एडवांस टैक्स समय पर भरें

■ एडवांस टैक्स न भरना या देर से भरना भी एक आम गलती है। ■ इसे चार किस्तों में भरना होता है।
■ 15 जून■ 15 सितंबर■ 15 दिसंबर■ 15 मार्च
■ समय पर भुगतान नहीं तो 1% तक की पेनल्टी।

सावधानी ही बचाव

आईटीआर फाइलिंग एक जरूरी वित्तीय जिम्मेदारी है, जिसे हल्के में नहीं लेना चाहिए। छोटी-छोटी गलतियां न सिर्फ आपके रिफंड को रोक सकती हैं, बल्कि आपको टैक्स नोटिस का सामना भी करना पड़ सकता है। इसलिए सही फॉर्म का चयन, सभी आय का खुलासा, दस्तावेजों का मिलान और समय पर वेरिफिकेशन ये सभी कदम बेहद महत्वपूर्ण हैं। अगर आप थोड़ी सावधानी और समझदारी से आईटीआर फाइल करते हैं, तो न सिर्फ प्रक्रिया आसान हो जाएगी, बल्कि आप किसी भी तरह की परेशानी से भी बच सकेंगे।

बाजार गिरे या चढ़े, बढ़ेगा पैसा ऐसे बनाएं निवेश का मास्टर प्लान

एक्सपर्ट के 5 फॉर्मूले अपनाने से आपका पोर्टफोलियो बनेगा 'मुनाफे की मशीन'

70:30 फॉर्मूला सुरक्षित निवेश और तेज ग्रोथ का संतुलन बनाएगा

मजबूत फंडामेंटल्स वाली कंपनियां बनती हैं लंबी रेस के घोड़े, विविधीकरण से घटेगा जोखिम

बिजनेस डेस्क

भारतीय शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव कोई नई बात नहीं है, लेकिन 2026 का बाजार पहले से ज्यादा जटिल और अवसरों से भरा हुआ नजर आ रहा है। ऐसे समय में निवेशकों के सामने सबसे बड़ा सवाल यही होता है कैसे निवेश करें, ताकि जोखिम भी कम रहे और रिटर्न भी बेहतर मिले? पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट्स का मानना है कि सही रणनीति, अनुशासन और धैर्य के साथ कोई भी निवेशक अपने पोर्टफोलियो को "मुनाफे की मशीन" में बदल सकता है। आज के दौर में केवल शेयर खरीदना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह समझना भी जरूरी है कि किस तरह का पोर्टफोलियो हर तरह के बाजार चाहे तेजी हो या गिरावट में संतुलन बनाए रख सके। निवेश का असली खेल 'टाइमिंग' नहीं, बल्कि 'टाइम इन मार्केट' है। यानी जितना ज्यादा समय आप बाजार में टिके रहते हैं, उतना ही ज्यादा कंपाउंडिंग का फायदा मिलता है। विशेषज्ञों के अनुसार, 2026 में निवेश के लिए '70:30' का फॉर्मूला सबसे प्रभावी रणनीतियों में से एक माना जा रहा है। इस फॉर्मूले के तहत निवेशक अपने पोर्टफोलियो का 70% हिस्सा मजबूत और स्थापित कंपनियों में लगाते हैं, जिन्हें 'कोर होल्डिंग्स' कहा जाता है। ये कंपनियां मजबूत बैलेंस शीट, बेहतर मैनेजमेंट और स्थिर आय के लिए जानी जाती हैं। बाजार में गिरावट के समय यही कंपनियां आपके निवेश को सुरक्षा देती हैं। वहीं, बाकी 30% हिस्सा 'टैक्टिकल इन्वेस्टमेंट' के लिए रखा जाता है। इसमें उभरते हुए सेक्टर्स, हाई ग्रोथ कंपनियां या शॉर्ट-टर्म ट्रेंड्स को ध्यान में रखकर निवेश किया जाता है। यह हिस्सा आपके पोर्टफोलियो को अतिरिक्त ग्रोथ देने का काम करता है। इस तरह यह फॉर्मूला सुरक्षा और आक्रामक ग्रोथ के बीच संतुलन बनाता है।

गिरावट में घबराएं नहीं, मौके पहचानें, धैर्य बनाए रखें

सही कंपनी का चयन ही असली खेल

शेयर बाजार में सफल निवेश केवल सही समय पर पैसा लगाने से नहीं, बल्कि सही कंपनी चुनने से तय होता है। विशेषज्ञों के अनुसार निवेश करने से पहले कंपनी के बिजनेस मॉडल, वित्तीय स्थिति और उसकी 'इकोनॉमिक मोट' को समझना बेहद जरूरी है। 'इकोनॉमिक मोट' का अर्थ उस विशेष ताकत से है, जो किसी कंपनी को प्रतिस्पर्धियों से अलग और मजबूत बनाती है। यह ताकत मजबूत ब्रांड वैल्यू, उन्नत तकनीक, बड़ा मार्केट शेयर, कम लागत पर उत्पादन या ग्राहकों का भरोसा हो सकती है।यदि किसी कंपनी का कारोबार लगातार बढ़ रहा हो, उसका कर्ज नियंत्रित हो और प्रबंधन पारदर्शी तरीके से काम करता हो, तो बाजार में आने वाली अस्थायी गिरावट का उस पर सीमित असर पड़ता है। ऐसी कंपनियां लंबे समय में निवेशकों को स्थिर और बेहतर रिटर्न देने की क्षमता रखती हैं।विशेषज्ञों का मानना है कि केवल सोशल मीडिया ट्रेंड, अफवाहों या 'हॉट टिप्स' के आधार पर निवेश करना जोखिम बढ़ा सकता है। निवेशकों को जल्दबाजी से बचते हुए कंपनी के फंडामेंटल्स, भविष्य की संभावनाओं और बिजनेस की गुणवत्ता का गहराई से विश्लेषण करना चाहिए।

विविधीकरण और लंबी अवधि

निवेश की दुनिया में एक पुरानी कहावत है "सारे अंडे एक टोकरी में मत रखो।" यही सिद्धांत शेयर बाजार में भी लागू होता है। विविधीकरण का मतलब है अपनी पूंजी को अलग-अलग सेक्टर्स और कंपनियों में बांटना ताकि किसी एक सेक्टर में गिरावट का असर पूरे पोर्टफोलियो पर न पड़े। उदाहरण के तौर पर, अगर आप केवल आईटी सेक्टर में निवेश करते हैं और उस सेक्टर में गिरावट आती है, तो आपका पूरा निवेश प्रभावित हो सकता है। लेकिन अगर आपने फाइनेंशियल, कंजम्पशन, मैन्युफैक्चरिंग और फार्मा जैसे अलग-अलग सेक्टर्स में निवेश किया है, तो एक सेक्टर की कमजोरी दूसरे सेक्टर की मजबूती से संतुलित हो सकती है। इसके साथ ही, लंबी अवधि का नजरिया बेहद जरूरी है। कई निवेशक छोटी-छोटी गिरावट से घबरा जाते हैं और जल्दबाजी में अपने निवेश को बेच देते हैं। लेकिन इतिहास बताता है कि जो निवेशक लंबे समय तक टिके रहते हैं, वही असली फायदा उठाते हैं। कंपाउंडिंग की ताकत समय के साथ ही काम करती है और धीरे-धीरे आपकी संपत्ति को कई गुना बढ़ा देती है और आपको पता भी नहीं चलता।

भावनाओं पर नियंत्रण सफल निवेशक की असली पहचान

शेयर बाजार में सफलता केवल ज्ञान या जानकारी से नहीं मिलती, बल्कि आपके व्यवहार और मानसिकता पर भी निर्भर करती है। बाजार में गिरावट के समय घबराहट और तेजी के समय लालच ये दोनों भावनाएं निवेशकों को गलत फैसले लेने पर मजबूर करती हैं। एक सफल निवेशक वही होता है जो इन भावनाओं पर नियंत्रण रख सके। जब बाजार गिरता है, तो उसे खतरे के बजाय अवसर के रूप में देखना चाहिए बशर्ते कंपनी के फंडामेंटल्स मजबूत हों। वहीं, तेजी के दौर में बिना सोचे-समझे निवेश करने से बचना चाहिए। एक तरह से निवेश में 'इमोशनल फायरवॉल' बनाना जरूरी है, जो आपको बाजार के शोर से दूर रखे और आपके फैसलों को तार्किक बनाए रखे। अनुशासन और धैर्य ही लंबे समय में बड़ी संपत्ति बनाने का आधार होते हैं।

सादगी, अनुशासन व धैर्य ही असली मंत्र

2026 के बदलते आर्थिक माहौल में निवेश करना चुनौतीपूर्ण जरूर है, लेकिन असंभव नहीं। अगर आप 70:30 का संतुलित फॉर्मूला अपनाते हैं, मजबूत फंडामेंटल्स वाली कंपनियों को चुनते हैं, अपने निवेश को विविध बनाते हैं और भावनाओं पर नियंत्रण रखते हैं, तो बाजार की हर स्थिति में अपनी संपत्ति को बढ़ा सकते हैं। याद रखें, शेयर बाजार में कोई शॉर्टकट नहीं होता। यहां सफलता उन्हीं को मिलती है जो धैर्य रखते हैं, अनुशासन का पालन करते हैं और लंबी अवधि के लिए निवेश करते हैं। अगर आप इन सिद्धांतों पर टिके रहते हैं, तो बाजार चाहे गिरे या चढ़े आपकी दौलत लगातार बढ़ती जाएगी।

डिफेंस म्यूचुअल फंड्स में 25% की छलांग मौका या जोखिम? ऐसे में क्या करें निवेशक

- एक माह की रैली ने निवेशकों के लिए बढ़ाया आकर्षण
- लेकिन एक्सपर्ट्स ने दे दी सावधानी बरतने की सलाह
- जियोपॉलिटिकल हालात व बढ़ते रक्षा खर्च ने दी रफ्तार
- चक्रीय प्रकृति वाला डिफेंस सेक्टर, उतार-चढ़ाव को रहें तैयार

पिछले एक महीने में डिफेंस सेक्टर से जुड़े म्यूचुअल फंड्स ने करीब 20% से 25% तक का शानदार रिटर्न दिया है। इतनी तेज बढ़त ने निवेशकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है और कई लोग इस सेक्टर में निवेश के अवसर तलाशने लगे हैं। लेकिन बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि इस तेजी के पीछे मजबूत फंडामेंटल्स से ज्यादा जियोपॉलिटिकल कारण और बाजार का मोमेंटम जिम्मेदार है। ऐसे में बिना सोचे-समझे निवेश करना जोखिम भरा साबित हो सकता है। जानकारों के अनुसार, निवेशकों को सिर्फ हालिया रिटर्न देखकर फैसले नहीं लेने चाहिए। बाजार में छोटी अवधि की तेजी अक्सर बाहरी घटनाओं से प्रभावित होती है, जबकि लंबी अवधि में किसी भी निवेश का प्रदर्शन उसकी कमाई, वैल्यूएशन और बिजनेस ग्रोथ पर निर्भर करता है।

जियोपॉलिटिकल तनाव बना तेजी का बड़ा कारण

डिफेंस सेक्टर में आई हालिया तेजी का मुख्य कारण वैश्विक स्तर पर बढ़ते तनाव और युद्ध जैसी परिस्थितियां हैं। जब दुनिया में अस्थिरता बढ़ती है, तो सरकारें रक्षा खर्च बढ़ाती हैं, जिससे इस सेक्टर की कंपनियों को अधिक ऑर्डर मिलने लगते हैं। इसका सीधा असर इन कंपनियों के शेयरों और उनसे जुड़े म्यूचुअल

फंड्स पर पड़ता है। हालांकि लंबे समय में डिफेंस सेक्टर की संभावनाएं मजबूत हैं जैसे कि भारत में स्वदेशीकरण को बढ़ावा, बढ़ता रक्षा बजट और मजबूत ऑर्डर बुक, लेकिन इस सेक्टर में प्रोजेक्ट्स को पूरा होने में समय लगता है।

'मोमेंटम फेज' में है डिफेंस सेक्टर

फिलहाल डिफेंस सेक्टर एक 'मोमेंटम फेज' से गुजर रहा है। यानी बाजार में तेजी से पैसा आ रहा है और निवेशकों का झुकाव इस सेक्टर की ओर बढ़ गया है। एक ही महीने में 20-25% तक का रिटर्न इस बात का संकेत है कि कीमतें कंपनियों के वास्तविक प्रदर्शन से ज्यादा बाजार की भावना और निवेश के फ्लो से प्रभावित हैं।

एसआईपी बनाम लंपसम : कैसे करें निवेश?

हालिया तेजी के बाद डिफेंस सेक्टर के वैल्यूएशन ऊंचे हो चुके हैं। ऐसे में एकमुश्त (लंपसम) निवेश करना जोखिम भरा हो सकता है। इसके बजाय एसआईपी (सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) के जरिए धीरे-धीरे निवेश करना बेहतर विकल्प है। एसआईपी का फायदा यह है कि निवेशक बाजार के उतार-चढ़ाव को औसत कर सकता है और जोखिम को कम कर सकता है।

डाइवर्सिफिकेशन ही सुरक्षित रास्ता

एक्सपर्ट्स का मानना है कि सीधे डिफेंस सेक्टर में निवेश करने के बजाय डाइवर्सिफाइड इक्विटी फंड्स में निवेश करना ज्यादा सुरक्षित है। जैसे फ्लेक्सी कैप, मल्टी कैप और लार्ज एंड मिड कैप फंड्स—ये विभिन्न सेक्टर्स में निवेश करते हैं और जोखिम को संतुलित रखते हैं। इन फंड्स में डिफेंस सेक्टर का एक्सपोजर भी होता है, लेकिन यह सीमित होता है, जिससे निवेशक को इस सेक्टर की ग्रोथ का फायदा तो मिलता है, लेकिन जोखिम कम रहता है। डिफेंस म्यूचुअल फंड्स में हालिया तेजी आकर्षक जरूर है, लेकिन यह स्थायी नहीं हो सकती। निवेशकों को केवल शॉर्ट टर्म रिटर्न देखकर निर्णय लेने से बचना चाहिए।

रिस्क है, लेकिन सही प्लान के साथ यही बन सकता है सबसे बड़ा मौका

धैर्य, मेहनत और स्मार्ट प्लानिंग से शुरू करें काम

जॉब छोड़ें व बन जाएं खुद के बॉस, कम निवेश में तगड़ी कमाई के रास्ते बदलते दौर में नौकरी नहीं, स्किल और सोच भी बन रही है असली ताकत

आइडिया

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में सिर्फ नौकरी पर निर्भर रहना कई लोगों को सीमित लगता है। बढ़ती महंगाई, सीमित सैलरी ग्रोथ और काम का दबाव ये सभी कारण लोगों को खुद का बिजनेस शुरू करने की ओर प्रेरित कर रहे हैं। हालांकि नौकरी छोड़कर बिजनेस शुरू करना एक बड़ा और जोखिम भरा फैसला होता है, लेकिन सही योजना, स्किल और मार्केट की समझ के साथ यह कदम आपकी जिंदगी बदल सकता है। अगर आप भी अपने करियर में बदलाव चाहते हैं और खुद का काम शुरू करने की सोच रहे हैं, तो मौजूदा ट्रेंड्स के आधार पर कुछ ऐसे बिजनेस आइडियाज हैं, जिन्हें कम निवेश में शुरू करके अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। खास बात यह है कि इनमें से ज्यादातर काम आप अपनी मौजूदा स्किल्स के दम पर ही शुरू कर सकते हैं। इससे आप खुद के बॉस बनकर अच्छी कमाई कर सकते हैं और अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं।

नौकरी छोड़कर बिजनेस शुरू करना बड़ा और चुनौतीपूर्ण फैसला होता है। इसमें केवल उत्साह ही नहीं, बल्कि सही रणनीति, धैर्य और लगातार मेहनत की भी जरूरत होती है। बिना तैयारी या केवल दूसरों को देखकर लिया गया निर्णय कई बार आर्थिक और मानसिक दबाव बढ़ा सकता है।

सही योजना बदल सकती है जिंदगी

नौकरी छोड़कर बिजनेस शुरू करना आसान नहीं है, लेकिन सही दिशा में उठाया गया कदम आपकी पूरी जिंदगी बदल सकता है। इन 5 बिजनेस आइडियाज की खासियत यह है कि ये वर्तमान ट्रेंड्स पर आधारित हैं और इनमें ग्रोथ की जबरदस्त संभावनाएं हैं। अगर आप धैर्य, मेहनत और स्मार्ट प्लानिंग के साथ काम करते हैं, तो शुरुआत छोटी हो सकती है, लेकिन सफलता बड़ी जरूर होगी। हालांकि नौकरी छोड़कर बिजनेस शुरू करना एक बड़ा और चुनौतीपूर्ण फैसला होता है। इसमें केवल उत्साह ही नहीं, बल्कि सही रणनीति, धैर्य और लगातार मेहनत की भी जरूरत होती है। बिना तैयारी या केवल दूसरों को देखकर लिया गया निर्णय कई बार आर्थिक और मानसिक दबाव बढ़ा सकता है। इसलिए किसी भी नए बिजनेस की शुरुआत से पहले अपने कौशल, अनुभव, बजट और बाजार की वास्तविक जरूरतों को समझना बेहद जरूरी है।

कंसल्टेंसी/फ्रीलांसिंग : अनुभव कमाई का जरिया

आज का समय 'स्किल इकॉनमी' का है, जहां आपकी योग्यता ही आपकी सबसे बड़ी पूंजी होती है। अगर आपने किसी कॉर्पोरेट सेक्टर में काम किया है जैसे आईटी, मार्केटिंग, एचआर या फाइनेंस तो आप आसानी से कंसल्टेंसी या फ्रीलांसिंग एजेंसी शुरू कर सकते हैं। इस बिजनेस में आपको बड़े ऑफिस या भारी निवेश की जरूरत नहीं होती। एक लैपटॉप, अच्छा इंटरनेट और प्रोफेशनल नेटवर्क ही आपकी शुरुआत के लिए काफी हैं। शुरुआत में आप छोटे क्लाइंट्स के साथ काम करके धीरे-धीरे अपनी टीम बना सकते हैं। कंसल्टेंसी बिजनेस की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें कमाई की कोई सीमा नहीं होती। शुरुआती स्तर पर ही 50 हजार से 1.5 लाख रुपये महीना कमाना संभव है।

क्लाउड किचन : खाने के बिजनेस में मौका

खाने-पीने का बिजनेस हमेशा से लाभदायक रहा है, लेकिन अब इसका स्वरूप बदल चुका है। आज लोग रेस्टोरेंट जाने के बजाय घर बैठे खाना ऑर्डर करना ज्यादा पसंद करते हैं। यही वजह है कि क्लाउड किचन तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। क्लाउड किचन की खासियत यह है कि इसमें आपको रेस्टोरेंट की तरह महंगा सेटअप या बड़ी जगह की जरूरत नहीं होती। आप अपने घर से या छोटे किचन स्पेस से भी शुरुआत कर सकते हैं। ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म पर रजिस्ट्रेशन करके आप अपने प्रोडक्ट को बड़े बाजार तक पहुंचा सकते हैं। इस बिजनेस में लागत अपेक्षाकृत कम होती है, जबकि मुनाफे की संभावना ज्यादा होती है। सही क्वालिटी और मार्केटिंग के साथ आप पहले ही महीने से अच्छी कमाई शुरू कर सकते हैं।

ई-कॉमर्स/ड्रॉपशिपिंग : स्मार्ट तरीका

डिजिटल इंडिया के इस दौर में ऑनलाइन बिजनेस तेजी से बढ़ रहा है। ई-कॉमर्स और ड्रॉपशिपिंग ऐसे मॉडल हैं, जिनमें आप बिना ज्यादा निवेश के अपना ऑनलाइन स्टोर शुरू कर सकते हैं। ड्रॉपशिपिंग की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें आपको प्रोडक्ट स्टॉक करने की जरूरत नहीं होती। जब ग्राहक ऑर्डर करता है, तो सप्लायर सीधे उस प्रोडक्ट को ग्राहक तक पहुंचाता है। इससे आपको गोदाम या इन्वेंट्री की चिंता नहीं रहती। यह बिजनेस पूरी तरह से ऑटोमेशन और डिजिटल मार्केटिंग पर आधारित है। सही रणनीति के साथ आप घर बैठे ही अच्छी कमाई कर सकते हैं। टेक गैजेट्स, किचन आइटम्स, हैंडीक्राफ्ट्स और इको-फ्रेंडली प्रोडक्ट्स जैसे सेगमेंट में काफी संभावनाएं हैं। यह बिजनेस धीरे-धीरे आपको 'पैसिव इनकम' का स्रोत भी दे सकता है, जहां आप सोते हुए भी कमाई कर सकते हैं।

ईवी चार्जिंग/ग्रीन एनर्जी : कल बनें लीडर

इलेक्ट्रिक वाहनों की बढ़ती लोकप्रियता ने एक नए बिजनेस सेक्टर को जन्म दिया है ईवी चार्जिंग स्टेशन। आने वाले वर्षों में यह सेक्टर तेजी से बढ़ने वाला है, जिससे इसमें निवेश करने वालों के लिए बड़े अवसर पैदा हो रहे हैं। आप रेजिडेंशियल सोसाइटी, मॉल या कमर्शियल एरिया में ईवी चार्जिंग पॉइंट लगाकर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इसके साथ ही, ईवी मेंटेनेंस और रिपेयरिंग सर्विस जोड़कर अपनी आय को और बढ़ा सकते हैं। हालांकि इस बिजनेस में शुरुआती निवेश थोड़ा ज्यादा होता है, लेकिन इसकी लॉन्ग-टर्म संभावनाएं बेहद मजबूत हैं। अगर आप शुरुआती दौर में इस सेक्टर में कदम रखते हैं, तो आने वाले समय में बड़ी सफलता हासिल कर सकते हैं।

डिजिटल कंटेंट/ऑनलाइन कोर्स

अगर आपके पास किसी विषय की गहरी जानकारी है चाहे वह स्टॉक मार्केट हो, पढ़ाई, फिटनेस, कुकिंग या टेक्नोलॉजी तो आप उसे डिजिटल कंटेंट या ऑनलाइन कोर्स के रूप में बदल सकते हैं। आज के समय में यूट्यूब, सोशल मीडिया और ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म्स के जरिए लाखों लोग अपनी स्किल्स को बिजनेस में बदल रहे हैं। इस मॉडल की खासियत यह है कि इसमें आप खुद का ब्रांड बनाते हैं और आपकी कमाई आपकी मेहनत और पहचान पर निर्भर करती है। शुरुआत में आपको एक अच्छे स्मार्टफोन, माइक्रोफोन और बेसिक एडिटिंग सेटअप की जरूरत होती है। जैसे-जैसे आपका कंटेंट लोकप्रिय होता है, आपकी कमाई भी तेजी से बढ़ती जाती है। यह बिजनेस आपको नाम, पैसा और स्वतंत्रता तीनों देता है।

पहली ईएमआई चल रही है, फिर भी चाहिए लोन?

- एफओआईआर का खेल : इनकम का कितना हिस्सा ईएमआई में जा रहा
- ईएमआई ज्यादा तो लोन मुश्किल, बैंक कैसे तय करते हैं आपकी क्षमता
- लोन का टाइप भी अहम : होम, पर्सनल या क्रेडिट कार्ड का फर्क

सावधानी

बिजनेस डेस्क

आज के समय में लगभग हर दूसरा व्यक्ति किसी न किसी लोन की ईएमआई चुका रहा है। चाहे वह होम लोन हो, कार लोन या फिर क्रेडिट कार्ड का बकाया। ऐसे में जब अचानक पैसों की जरूरत पड़ती है, तो सबसे बड़ा सवाल यही उठता है कि क्या पहले से ईएमआई चलने के बावजूद नया लोन मिल सकता है? जवाब है हां, मिल सकता है, लेकिन इसके लिए कुछ जरूरी शर्तों को पूरा करना होता है। बैंक सिर्फ आपकी सैलरी देखकर लोन मंजूर नहीं करते, बल्कि यह भी देखते हैं कि आपकी आय का कितना हिस्सा पहले से ईएमआई में जा रहा है और आपके पास कितना पैसा बच रहा है। यही गणित तय करता है कि आप नए लोन के लिए योग्य हैं या नहीं।

ईएमआई घटाएं, लोन की राह बनाएं, छोटे बदलाव का बड़ा असर

एफओआईआर क्या है

जब आप किसी बैंक या फाइनेंशियल संस्थान में लोन के लिए आवेदन करते हैं, तो सबसे पहले आपकी आय और खर्च का विश्लेषण किया जाता है। इसमें एक अहम भूमिका निभाता है एफओआईआर यानी फिक्स्ड ऑब्जेक्शन टू इनकम रेशियो। एफओआईआर यह बताता है कि आपकी कुल मासिक आय का कितना हिस्सा पहले से चल रही ईएमआई में खर्च हो रहा है। उदाहरण के तौर पर, अगर आपकी सैलरी 1 लाख रुपये है और आप 40,000 रुपये ईएमआई दे रहे हैं, तो आपका एफओआईआर 40% होगा। बैंक आमतौर पर 50% से कम एफओआईआर को सुरक्षित मानते हैं। अगर यह अनुपात 60% या उससे ज्यादा हो जाता है, तो बैंक को लगता है कि आप पर कर्ज का बोझ ज्यादा है, जिससे नए लोन की मंजूरी मुश्किल हो सकती है।

ईएमआई ज्यादा होने पर मुश्किल

जितनी ज्यादा आपकी मौजूदा ईएमआई होगी, उतनी ही कम आपकी नई लोन लेने की क्षमता होगी। बैंक यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि आप नया लोन भी बिना किसी परेशानी के चुका सकें। अगर आपकी आय का बड़ा हिस्सा पहले से ईएमआई में जा रहा है, तो बैंक के लिए यह जोखिम बढ़ जाता है कि आप भविष्य में भुगतान करने में चूक कर सकते हैं। इसी वजह से ज्यादा ईएमआई वाले ग्राहकों को या तो लोन नहीं मिलता या फिर कम राशि का लोन ऑफर किया जाता है।

लोन का प्रकार भी करता है असर

■ सिर्फ ईएमआई की राशि ही नहीं, बल्कि यह भी मायने रखता है कि आपका लोन किस प्रकार का है।
■ होम लोन : इसे सबसे सुरक्षित माना जाता है, क्योंकि इसके बदले संपत्ति गिरवी होती है।
■ कार लोनः मध्यम जोखिम की श्रेणी में आता है।
■ पर्सनल लोनः इसमें जोखिम ज्यादा होता है, क्योंकि यह बिना किसी गारंटी के दिया जाता है।
■ क्रेडिट कार्ड बकायाः इसे सबसे ज्यादा जोखिम वाला माना जाता है।
■ बैंक ऐसे ग्राहकों को प्राथमिकता देते हैं, जिनका कर्ज संतुलित और नियंत्रित होता है। अगर आपके पास ज्यादा अनसिक्योर्ड लोन (जैसे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड) हैं, तो नया लोन मिलने में दिक्कत हो सकती है।

क्या ईएमआई कम करके बढ़ा सकते हैं लोन की संभावना?

अगर आप नया लोन लेना चाहते हैं, तो अपनी मौजूदा ईएमआई को कम करना एक अच्छा उपाय हो सकता है। इसके लिए आप छोटे-छोटे लोन पहले बंद कर सकते हैं। मान लीजिए आपकी सैलरी 1 लाख रुपये है और ईएमआई 50,000 रुपये है (एफओआईआर = 50%)। अगर आप 5,000 रुपये की ईएमआई वाला लोन बंद कर देते हैं, तो एफओआईआर घटकर 45% हो जाएगा। इससे आपकी लोन लेने की क्षमता बढ़ सकती है। हालांकि, यह ध्यान रखना जरूरी है कि लोन बंद करने के बाद इसका असर आपके क्रेडिट रिकॉर्ड में दिखने में 30–45 दिन का समय लग सकता है।

क्रेडिट स्कोर बनाम ईएमआई

लोन लेते समय क्रेडिट स्कोर भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आमतौर पर 750 या उससे अधिक का स्कोर अच्छा माना जाता है और इससे बैंक का भरोसा बढ़ता है। लेकिन सिर्फ अच्छा क्रेडिट स्कोर होना ही काफी नहीं है। अगर आपकी ईएमआई पहले से ज्यादा है और एफओआईआर उच्च स्तर पर है, तो लोन मिलने में परेशानी हो सकती है।

सरल शब्दों में ऐसे समझें

■ क्रेडिट स्कोर बैंक का भरोसा बढ़ाता है
■ एफओआईआर (ईएमआई का बोझ) तय करता है कि कितना लोन मिलेगा
■ नया लोन लेने से पहले ध्यान रखें ये बातें
■ अपनी सभी ईएमआई की सही जानकारी बैंक को दें, कुछ भी छिपाने की कोशिश न करें।
■ कोशिश करें कि आपकी कुल ईएमआई आपकी आय के 40% के आसपास ही रहे।
■ छोटे और अनावश्यक लोन को पहले बंद करें।
■ क्रेडिट कार्ड का बकाया समय पर चुकाएं।
■ खर्च और कर्ज के बीच संतुलन बनाए रखें।
■ सही बैलेंस से ही मिलेगा नया लोन

सही संतुलन बनाए रखें

अगर आपके ऊपर पहले से ईएमआई चल रही है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि आपको नया लोन नहीं मिल सकता। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि आप अपनी आय, खर्च और कर्ज के बीच सही संतुलन बनाए रखें। एफओआईआर को नियंत्रित रखना, क्रेडिट स्कोर अच्छा बनाए रखना और अनावश्यक कर्ज से बचना— ये तीन बातें आपको आसानी से नया लोन दिला सकती हैं। सही प्लानिंग के साथ आप न सिर्फ नया लोन ले सकते हैं, बल्कि अपनी वित्तीय स्थिति को भी मजबूत बना सकते हैं।

फाइनल रिहर्सल में सहायक रिटर्निंग अधिकारी रितु बंसीवाल ने पोलिंग पार्टियों को दिए निर्देश, मतदान आज

वार्ड-13 उपचुनाव को लेकर प्रशासन अलर्ट

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

नगर परिषद झज्जर के वार्ड नंबर-13 में रविवार को होने वाले उपचुनाव को लेकर जिला प्रशासन ने सभी आवश्यक तैयारियां पूर्ण कर ली हैं। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि निर्वाचन प्रक्रिया को निष्पक्ष, शांतिपूर्ण एवं पारदर्शी ढंग से संपन्न कराने के लिए प्रशासनिक स्तर पर व्यापक प्रबंध किए गए हैं। उन्होंने बताया कि उपचुनाव के सुचारू संचालन, कानून व्यवस्था बनाए रखने तथा मतदान प्रक्रिया के दौरान सतर्क निगरानी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से ड्यूटी मजिस्ट्रेट एवं सेक्टर सुपरवाइजर नियुक्त किए गए हैं। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023 की धारा 16(1) एवं 17(2) के तहत अधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं ताकि निर्वाचन प्रक्रिया के दौरान किसी भी प्रकार की अव्यवस्था उत्पन्न न हो। उन्होंने बताया कि शहीद रमेश कुमार राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में उपचुनाव के मद्देनजर 2 मतदान केंद्र बनाए गए हैं, जहां मतदाताओं की सुविधा एवं सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। एसडीएम रवि मीणा को रिटर्निंग अधिकारी तथा सीटीएम रितु बंसीवाल को सहायक रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किया गया है। इसके अतिरिक्त एटीपी सतीश कुमार को रिजर्व ड्यूटी मजिस्ट्रेट एवं राकेश कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर को रिजर्व सेक्टर सुपरवाइजर की जिम्मेदारी दी गई है। उन्होंने बताया कि मतदान 10 मई को सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक होगा। यदि आवश्यक हुआ तो पुनर्मतदान 12 मई को कराया जाएगा, जबकि मतों की गणना 13 मई को सुबह आठ बजे संबंधित मतगणना केंद्र पर की जाएगी तथा परिणाम तुरंत घोषित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अधिकतम जनभागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मतदान दिवस पर संबंधित क्षेत्र में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया है। यह अवकाश संबंधित क्षेत्र में आने वाली फैक्ट्रियों, औद्योगिक इकाइयों, दुकानों, वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों एवं अन्य संस्थानों पर लागू रहेगा, ताकि कर्मचारी एवं मतदाता निर्बाध रूप से अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें। उधर, सीटीएम एवं सहायक रिटर्निंग अधिकारी रितु बंसीवाल ने पोलिंग पार्टियों को जरूरी निर्देश दिए।

झज्जर। फाइनल रिहर्सल में पोलिंग पार्टियों को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए सीटीएम रितु बंसीवाल। फोटो : हरिभूमि

धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा भी लागू

उपचुनाव के मद्देनजर जिला प्रशासन द्वारा भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा भी लागू की गई है। आदेशों के अनुसार मतदान केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में पांच या उससे अधिक व्यक्तियों के एकत्रित होने पर रोक रहेगी। साथ ही किसी भी व्यक्ति द्वारा हथियार या घातक वस्तु लेकर चलने पर प्रतिबंध लगाया गया है। आदेशों की उल्लंघना करने वालों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 के तहत कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

तीन गांवों में छह बूथों पर होगा मतदान

बहादुरगढ़। पंचायत समिति के एक वार्ड के लिए रविवार को उपचुनाव कराया जाएगा। इस वार्ड में टांडाहेड़ी, सराय औरंगाबाद और कसार गांव शामिल हैं, जहां कुल छह मतदान केंद्र बनाए गए हैं। मतदान सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक ईवीएम के जरिए होगा। शनिवार को बीडीपीओ कार्यालय से पोलिंग पार्टियों को रवाना किया गया। चुनाव को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए पुलिस ने भी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। मतदान के बाद मतगणना और परिणाम घोषणा बीडीपीओ कार्यालय में ही होगी। यह उपचुनाव पंचायत समिति सदस्य के निधन के बाद कराया जा रहा है। चुनाव मैदान में अब दो उम्मीदवार आमने-सामने हैं। पहले तीन नामांकन दाखिल हुए थे, जिनमें से एक उम्मीदवार ने नाम वापस ले लिया था। इसके साथ चार गांवों के आठ पंचायत वार्डों की चुनाव प्रक्रिया भी हुई थी। इनमें तीन वार्ड निर्विरोध चुने गए, जबकि मांडौठी गांव के पांच वार्डों में कोई नामांकन नहीं आने से सीटें खाली रह गईं।

उपचुनाव को लेकर मतदान केंद्रों पर कड़े सुरक्षा इंतजाम : डॉ. राजश्री सिंह

झज्जर। रविवार को होने वाले पंचायती, नगर परिषद झज्जर तथा ब्लॉक समिति सदस्य के उपचुनाव को लेकर पुलिस प्रशासन हाई अलर्ट पर है। चुनाव प्रक्रिया को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष और भयमुक्त वातावरण में संपन्न कराने के लिए पुलिस द्वारा व्यापक सुरक्षा इंतजाम किए गए हैं। पुलिस कमिश्नर डॉक्टर राजश्री सिंह ने बताया कि जिले के सभी मतदान केंद्रों पर सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया गया है ताकि मतदान के दौरान किसी प्रकार की अव्यवस्था या कानून व्यवस्था संबंधी समस्या उत्पन्न न हो। उन्होंने कहा कि उपचुनाव के दौरान संवेदनशील और अति संवेदनशील मतदान केंद्रों पर विशेष निगरानी रखी जाएगी। सभी मतदान केंद्रों पर पर्याप्त संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया है। इसके अलावा डीसीपी और एसीपी रैंक के अधिकारियों की ड्यूटी भी लगाई गई है,जो लगातार क्षेत्र का दौरा कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेंगे। थाना और चौकी प्रभारियों को भी अपने-अपने क्षेत्र में विशेष सतर्कता बरतने और चुनाव आयोग के दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करवाने के आदेश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि मतदान केंद्रों के आसपास किसी भी प्रकार की भीड़भाड़ या गैरजरूरी गतिविधियों की अनुमति नहीं होगी। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान शांति व्यवस्था भंग करने, अफवाह फैलाने या किसी प्रकार की गड़बड़ी करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। इसके साथ ही पुलिस द्वारा जिले में लगातार गश्त भी बढ़ा दी गई है। संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखने के लिए विशेष टीमें गठित की गई हैं।

पंचायतीराज संस्थाओं के उपचुनाव को लेकर पोलिंग पार्टियां बूथों के लिए रवाना

झज्जर। मतदान केंद्र पर जाते हुए पोलिंग पार्टी।

झज्जर। मतदान केंद्रों पर रवाना होते हुए पोलिंग पार्टियां।

झज्जर। रविवार को होने वाले पंचायती राज संस्थाओं के अंतर्गत गांव धांधलान, बाढ़सा और पंचायत समिति बहादुरगढ़ वार्ड 14 में समिति सदस्य के उप चुनाव के लिए चुनाव सामग्री लेकर सभी पोलिंग पार्टियां संबंधित मतदान केंद्रों के लिए भेजी जा चुकी है। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी पंचायत स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि पंचायती राज संस्थाओं के बेरी खंड के गांव धांधलान, बादली खंड के गांव बाढ़सा और पंचायत समिति बहादुरगढ़ वार्ड 14 में समिति सदस्य के लिए होने वाले उप चुनाव को लेकर शनिवार को पोलिंग पार्टियों को चुनाव सामग्री वितरित कर मतदान केंद्र के लिए रवाना कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि चुनाव ड्यूटी में तैनात पीठासीन व पोलिंग अधिकारियों सहित पोलिंग पार्टियों को इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन, पीठासीन अधिकारी डायरी, सील, ग्रीन पेपर सील, बैलेट पेपर व स्ट्रीप सील आदि दस्तावेज वितरित किए गए। रविवार को सुबह आठ बजे मतदान शुरू हो जाएगा और सायं छह बजे तक चलेगा। मतदान की शुरूआत से 90 मिनट पहले प्रत्याशियों के बूथ स्तर के एजेंटों की उपस्थिति में संबंधित पीठासीन अधिकारी द्वारा मॉक पोल भी करवाया जाएगा। उन्होंने बताया कि निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार पीठासीन अधिकारी समय-समय पर मतदान संबंधी जानकारी संबंधित सहायक रिटर्निंग अधिकारी और चुनाव आयोग को एसएमएस के माध्यम से उपलब्ध करवाते रहेंगे। उन्होंने बताया कि पंचायत समिति सदस्य वार्ड-14 बहादुरगढ़ उपचुनाव के लिए 2 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। वहीं गांव धांधलान में सरपंच पद के लिए 3 उम्मीदवार तथा गांव बाढ़सा में सरपंच पद के लिए 9 उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमा रहे हैं।

न्यूज डायरी

त्रिवेणी स्कूल में किया मां को नमन

बहादुरगढ़। शहर के त्रिवेणी मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल मदर्स-डे पर विशेष कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना व स्वागत भाषण से हुई। विद्यार्थियों ने अपनी माताओं को समर्पित सुंदर भाषण, कविताएं एवं गीत प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। कक्षा 12वीं की छात्रा गीतांजलि ने मां पर आधारित भावपूर्ण कविता सुनाई। विद्यार्थियों ने हस्तनिर्मित कार्ड, फोटो फ्रेम, वॉल हैंगिंग, गुलदस्ता व हस्तकला प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। प्रधानाचार्या सुमित्रा महला ने कहा कि मां केवल परिवार की आधारशिला ही नहीं, बल्कि बच्चों के जीवन की प्रथम शिक्षिका भी होती हैं। माताओं का प्रेम, त्याग और संस्कार ही बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करते हैं। स्कूल निदेशिका संगीता वर्मा ने सभी प्रतिभागियों एवं शिक्षकों का धन्यवाद किया।

डीएवी में मातृ दिवस पर प्रतियोगिता का आयोजन

बहादुरगढ़। डीएवी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल में मातृ दिवस के उपलक्ष्य में प्री-प्राइमरी से द्वितीय कक्षा तक के विद्यार्थियों द्वारा भव्य एवं भावनात्मक कार्यक्रम किया गया। इस दौरान क्राउन मेकिंग, कुल्हड़ पेंटिंग और सजावट, समूह नृत्य, नाटक, रैंप वॉक व गीत विशेष प्रतियोगिताएं हुईं। इनमें माताओं ने पूरे उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया। प्राचार्य राजदीप कुलश्रेष्ठ के साथ मुख्य अतिथि मीना कुमारी, सुजाता और रेनू ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम शुरू किया। विद्यार्थियों ने मातृशक्ति के सम्मान में मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम का संचालन शिवांगी व पूजा ने किया। इस अवसर पर ब्रह्मजीत छिकारा, ईश्वर आर्या, जयपाल दहिया, बिजेंद्र खोखर, हरिओम दलाल व बिशन स्वरूप खत्री आदि उपस्थित रहे।

एसआर सेंचुरी में माताओं का किया चरण वंदन

बहादुरगढ़। एसआर सेंचुरी पब्लिक स्कूल में मातृ दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। बच्चों ने अपनी माता का पुष्पों से चरण वंदन किया। विनोद कौशल, प्रधानाचार्य बीके झा, स्कूल निदेशक संजीत राठी व समां राठी ने समाज एवं संस्कृति के विकास में माता की भूमिका के बारे में बताया। शिक्षिका पूजा अग्रवाल, मुकता व सोनिया के निर्देशन में बच्चों ने माताओं का स्वागत तिलक लगाकर किया। कार्यक्रम का संचालन कक्षा 12वीं की छात्रा प्राची और कनिका ने किया। दित्या शर्मा, काजल, अमायरा, संस्कृति, लावण्या, सेवी, वंश, देव, देवांश, आदित्य, प्रकृति, तरुण, सुवानी, तनिष्का, ईशा, आश्वि, हार्दिका, काम्यावानी, माही, अवनी, उदिति, माही, कौंशु, तनिष्का, दक्ष, तृषा, हंसिका, अवनी, यशिका, दिव्या व कलश ने अपनी प्रस्तुतियों से प्रभावित किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में पूजा, सुखवंती, नीतू, किरण, कोमल व नीतू ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

गीतों से बताई मां की महिमा

झज्जर। एलए सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शनिवार को मदर्स-डे सेलिब्रेशन किया गया। कार्यक्रम में प्रि-प्राइमरी से लेकर पांचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों व उनकी माताओं ने भाग लिया। प्ले ग्रुप में जहां शिट एंड स्टैंडअप एक्टिविटी में बच्चों के साथ महिला अभिभावकों ने भाग लिया वहीं महिला अभिभावकों के लिए म्यूजिकल चेयर, बेलून बैलेंस, सर्किट आउट एंड इन, रैंप वॉक आदि प्रतियोगिताएं कराई गईं। पांचवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने अपनी माताओं के सम्मान में गीतों व नृत्य की प्रस्तुति दी। स्कूल संचालक जगपाल गुलिया, जयदेव दहिया, अनिता गुलिया, नीलम दहिया, योजित गुलिया, भविष्य दहिया, प्रबंधक केएम डागर व स्कूल प्राचार्या निधि कादियान द्वारा सभी विजेता विद्यार्थियों व महिला अभिभावकों को पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर एचओडी पुष्पा यादव, सपना अहलावत, एक्टिविटी इंचार्ज रितिका, जितेंद्र, संगीत प्राध्यापक सतीश रोहिला, भूगोल प्राध्यापक मुकेश शर्मा व प्रियंका यादव सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

मातृ दिवस माताओं के प्रेम व बलिदान का प्रतीक

झज्जर। एचआर ग्रीन फील्ड स्कूल में शनिवार को मातृ दिवस धूमधाम से मनाया। स्कूल संचालक विकास धनखड़, प्राचार्य मोहिंद्र सिंह गुलिया ने मां सरस्वती की प्रतिमा के सामने दीप प्रज्ज्वलित करते हुए समारोह की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि मातृ दिवस माताओं के प्रेम और बलिदानों का सम्मान करने का दिन है। एक मां की देखभाल निस्वार्थ और बिना शर्त होती है। वह हमें प्रतिदिन सिखाती हैं, हमारा समर्थन करती हैं और हमें प्रेरित करती हैं। हमने साथ में जो भी पल बिताए हैं, हमें उन सभी को संजो कर रखना चाहिए। इसके उपरांत विद्यार्थियों व महिला अभिभावकों संबंधी विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन भी किया गया।

सैनिक स्कूल में माताओं व दादियों का सम्मान

बहादुरगढ़। सैनिक पब्लिक स्कूल परिसर में मदर्स डे के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में आई बच्चों की माताओं और दादियों का सम्मान किया गया। दादियों को फूलमाला पहनाकर और माताओं को बैज लगाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रिंसिपल बीएल भारद्वाज ने की। इस दौरान मदर्स डे के महत्व पर प्रकाश डाला गया। बच्चों ने अपनी माताओं के सम्मान में कविता पाठ और नृत्य प्रस्तुत कर स्नेह व्यक्त किया। माताओं के लिए तंबोला, म्यूजिकल चेयर, बिंदी गेम और रैंप वॉक जैसे मनोरंजक खेल आयोजित किए गए, जिनमें उन्होंने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विजेता प्रतिभागियों को प्रिंसिपल ऊषा भारद्वाज ने उपहार देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित माताओं के लिए जलपान की व्यवस्था की गई। माताओं ने आयोजन की सराहना करते हुए स्कूल प्रबंधन का आभार जताया।

सूचना

मैं, सुंदर लाल पुत्र श्री राम लुभहया निवासी मकान नंबर-341/21, संत कॉलोनी, रेलवे रोड, बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा बयान करता हूं कि मेरा पुत्र अक्षय टक्कर मेरे कहने सुनने से बाहर है और मैं उससे अपने तमाम संबंध समाप्त करते हुए अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं। भविष्य में अक्षय टक्कर के साथ किसी तरह का लेन-देन करने व व्यवहार रखने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। अक्षय टक्कर अपने प्रत्येक कार्य के लिए स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरा व मेरे परिवार के सदस्यों का उससे कोई संबंध व सरोकार नहीं रहा।

महाराणा प्रताप को किया नमन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

भारत विकास परिषद की बहादुरगढ़ शाखा की ओर से शनिवार को शहर के राणा प्रताप स्कूल में महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। नप चेयरपर्सन सरोज राठी के पति रमेश राठी ने वाइस चेयरमैन राजपाल शर्मा और भाविप सदस्यों के साथ महाराणा प्रताप के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। रमेश राठी ने कहा कि महाराणा प्रताप ने उस जमाने में भी अपना स्वाभिभान बचाए रखा। हमें वीर महाराणा प्रताप के आदर्शों से प्रेरणा लेनी चाहिए। शाखा अध्यक्ष रमेश गुप्ता और पूर्व अध्यक्ष हरीश बजाज ने कहा कि महाराणा प्रताप ने जन्मभूमि की रक्षा करते हुए सब कुछ न्योछावर कर दिया। स्कूल प्रबंधक आनंद पंवार ने कहा कि उनके आदर्शों से प्रेरित होकर ही इस स्कूल का नाम राणा प्रताप के नाम पर रखा था। उनके जीवन से हमें कठिन परिस्थितयों में हार न मानने की प्रेरणा मिलती है।

बहादुरगढ़। महाराणा प्रताप को नमन करते भाविप सदस्य।

ये मौजूद रहे

इस अवसर पर पार्षद प्रवीण कुमार, भाविप के प्रांतीय संगठन सचिव मूलचंद जोशी, जिला समन्वयक सतीश शर्मा, शाखा सचिव विजय पुन्हानी, पूर्व अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक, कोषाध्यक्ष एमएस भाटी, अशोक पुन्हानी, शिक्षाविद सुनीता पंवार, डॉ. जसवंत कुमार और जगबीर देशवाल आदि ने भी महाराणा प्रताप को नमन किया।

नशा मुक्ति, सड़क सुरक्षा, साइबर क्राइम और डायल 112 के प्रति किया जागरूक

झज्जर। कस्बा बेरी में जिला पुलिस की नशा मुक्ति टीम द्वारा विद्यार्थियों को यातायात नियमों की पालना, नशे के दुष्प्रभाव, साइबर क्राइम और डायल 112 बारे जानकारी देते हुए जागरूक किया गया। एएसआई पवन कुमार ने विद्यार्थियों को बताया कि वाहन चलाते समय हमेशा यातायात नियमों का पालन करना चाहिए और वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करना चाहिए और ना ही नशे में वाहन चलना चाहिए। उन्होंने बताया कि पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का भी बहुत महत्व है इसलिए खेलों में भी बढ़ चढ़कर भाग ले। नशे और शरारती तत्वों से दूर रहे। पढ़ाई खेलकूद के साथ अपने माता-पिता के साथ भी टाइम बिताएं, अपने पूरे दिन की दिनचरियां अपने माता-पिता को बताएं और उनकी बातों पर पूरा अमल करें। उन्होंने बताया कि साइबर क्राइम के प्रति जागरूकता ही साइबर क्राइम को रोक सकती है। इसलिए हमें किसी के साथ भी ओटीपी या किसी अनजान लिंक और बैंक से संबंधित गोपनीय जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि आपातकालीन स्थिति में डायल 112 का प्रयोग करें।

अक्षित व महक को मिला हेड ब्वाय व हेड गर्ल का खिताब

झज्जर। आरईडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को छात्र परिषद अलंकरण समारोह तथा छात्रवृत्ति एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय निदेशक जितेंद्र सिंह अहलावत ने मुख्यातिथि व उप निदेशक शैलेंद्र अहलावत ने विशिष्टातिथि के रूप में शिरकत की। समारोह में विद्यार्थियों ने स्वागत नृत्य, मार्चपास्ट, लघु नाटिका, नेतृत्व आधारित गीत और रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। इस दौरान अक्षित अहलावत को हेड ब्वाय व महक जाखड़ को हेड गर्ल का खिताब मिला, जबकि हर्षित व रिद्धम ने असिस्टेंट हेड ब्वाय व असिस्टेंट हेड गर्ल के रूप में शपथ ली। साक्षी को बेस्ट बिहेव्ड स्टूडेंट ऑफ द ईयर, कुसुम को परफॉर्मर ऑफ द ईयर, सुनील को बेस्ट एथलीट तथा अक्षित अहलावत को आइडियल आरईडीयन अवार्ड मिला। छात्र परिषद के सभी पदाधिकारियों को मुख्यातिथि द्वारा बैज व सैश पहनाकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा मदर्स-डे के उपलक्ष्य में उपस्थित महिला अभिभावकों को कार्ड व चॉकलेट से पुरस्कृत किया गया।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व को लेकर तैयारियां तेज

झज्जर। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के उपलक्ष्य में सोमवार को बाबा प्रसादगिरी मंदिर में होने वाले कार्यक्रम को लेकर तैयारियां जोरों पर चल रही हैं। कार्यक्रम के लिए शहर की सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं की सक्रिय भागीदारी रहेगी। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व जिला स्तर पर शहर के बाबा प्रसाद गिरी मंदिर परिसर में श्रद्धा, उत्साह के साथ भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम को सफल एवं सुव्यवस्थित बनाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा आवश्यक तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। इसके साथ साथ सभी उप मंडलों में भी कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि जिला स्तरीय कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद संजय भाटिया बतौर मुख्यातिथि जबकि बहादुरगढ़ के विधायक राजेश जून विशिष्ट अतिथि के तौर पर शिरकत करेंगे। वहीं कार्यक्रम के नोडल अधिकारी जिप सीईओ मनीष फौगाट ने बताया कि कार्यक्रम के अंतर्गत सोमवार सुबह नौ बजे महिलाओं द्वारा भव्य कलश यात्रा निकाली जाएगी, यह कलश यात्रा बाबा प्रसाद गिरी मंदिर से शुरू होकर चौपटा बाजार, डायमंड चौक, गोपाल मंदिर होते हुए वापिस मंदिर परिसर में जलाभिषेक के साथ सम्पन्न होगी। इसके उपरांत भगवान शिव की पूजा-अर्चना की जाएगी।

कौशल विकास के जरिए विकसित भारत बनाने की दिशा में जुटें संस्थान : गोयल

झज्जर। हरियाणा कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग के उपनिदेशक अनिल कुमार गोयल ने अपने तीन दिवसीय दौरे में विद्यार्थियों व स्टॉफ सदस्यों को कौशल विकास की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सभी संस्थानों में तीन दिवसीय दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा प्रशिक्षण गतिविधियों की समीक्षा की। शनिवार को उन्होंने राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान झज्जर एट गुढ़ा में जिला के सभी राजकीय आईटीआई संस्थानों के प्राचार्यों, वर्ग अनुदेशक इंचार्जों तथा शिक्षुता एवं प्लेसमेंट अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। उन्होंने कहा कि यदि युवा तकनीकी रूप से दक्ष होंगे तो राष्ट्र भी विकसित और आत्मनिर्भर बनेगा। ऐसे में प्रशिक्षण संस्थानों का दायित्व है कि वे विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगारपरक प्रशिक्षण उपलब्ध करवाएं।

डीएवी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल में अध्यापकों के लिए एक दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन

शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति की दी जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के तत्वावधान में डीएवी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल में अध्यापकों के लिए एक दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विभिन्न प्रावधानों, नवाचारों एवं शिक्षण पद्धतियों से अवगत करवाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में प्रधानाचार्य राजदीप कुलश्रेष्ठ ने सपना बहल, नरेंद्र और योगिता के साथ दीप प्रज्ज्वलित कर तथा गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ किया। मंच संचालन शालू शर्मा ने किया। सीबीएसई द्वारा नियुक्त प्रशिक्षक सपना बहल व नरेंद्र ने विभिन्न सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को एनईपी के उद्देश्यों, नवीन शिक्षण विधियों, कौशल आधारित शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम व विद्यार्थियों के समग्र विकास से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दी। साथ ही गतिविधि-आधारित शिक्षण एवं केस स्टडी के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया। राजदीप कुलश्रेष्ठ ने कहा कि शिक्षकों की भूमिका केवल पाठ्य ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि वे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं भविष्य निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में शिक्षकों को जानकारी देती सपना बहल। फोटो : हरिभूमि

शिक्षकों को सिखाए जीवन कौशल के गुर

झज्जर। कैंब्रिज इंटरनेशनल स्कूल बिरड़ में शनिवार को सीबीएसई सीबीपी ऑन लाइफ स्किल्स का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों में जीवन कौशल जैसे आत्म-जागरुकता, सहानुभूति, प्रभावी संचार, निर्णय लेने की क्षमता, समस्या समाधान, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, तनाव प्रबंधन एवं अनुकूलन क्षमता जैसे महत्वपूर्ण कौशलों का विकास करना रहा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 60 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। रिसोर्स पर्सन नरसिंह चाहर व प्रिया बंगा ने अपने प्रभावशाली सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को जीवन कौशल के विभिन्न आयामों से अवगत कराया। कैम्ब्रिज ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन एडवोकेट शरद राव ने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों के व्यावसायिक और व्यक्तिगत विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। प्राचार्य डॉक्टर मनजीत कुमार ने कहा कि जीवन कौशल आधारित शिक्षा विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अत्यंत सहायक है। सभी प्रतिभागियों ने इसे अत्यंत उपयोगी, प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक अनुभव बताया।

संस्कारम विश्वविद्यालय में मातृ दिवस पर सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से छात्रों ने मन मोहा

मां का प्रेम और संस्कार ही व्यक्ति को बनाते हैं महान : डॉ. महिपाल

कार्यक्रम में माताओं ने अपने अनुभवों एवं प्रेरणादायी विचारों से खूब वाहवाही बटोरी

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

शनिवार को संस्कारम विश्वविद्यालय के डीएलसी ऑडिटोरियम में अंतरराष्ट्रीय मातृ दिवस बड़े ही भावनात्मक रूप से सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं मां सरस्वती की वंदना के साथ किया गया। इसके पश्चात विद्यार्थियों द्वारा मातृत्व को समर्पित रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी । विद्यार्थियों ने कविताओं, गीतों एवं नृत्य प्रस्तुतियों के माध्यम से मां के त्याग, प्रेम, समर्पण एवं संघर्ष को अत्यंत मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया। कई प्रस्तुतियों ने उपस्थित लोगों की आंखों को नम कर दिया तथा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इसमें उपस्थित माताओं ने भी मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। माताओं द्वारा प्रस्तुत गीत, अनुभव एवं प्रेरणादायी विचारों ने कार्यक्रम को और अधिक आत्मीय एवं पारिवारिक स्वरूप प्रदान किया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि संस्कारम ग्रुप की वाइस चेयरपर्सन सुमन यादव ने शिरकत की। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि मां परिवार की आत्मा होती है। वह अपने बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए हर कठिनाई को मुस्कुराकर सहन करती है। विश्वविद्यालय के चांसलर डॉक्टर महिपाल ने कहा कि मां केवल परिवार की आधारशिला नहीं बल्कि पूरे समाज की प्रेरणा होती है। मनुष्य के जीवन में संस्कारों का पहला पाठ मां ही पढ़ाती है। एक मां अपने बच्चों के सुख, शिक्षा और भविष्य के लिए जीवनभर संघर्ष करती है। हमें सदैव अपनी माता का सम्मान करना चाहिए और उनके आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए। मातृ शक्ति का सम्मान ही सच्चे अर्थों में भारतीय संस्कृति का सम्मान है।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित संस्कारम ग्रुप की वाइस चेयरपर्सन सुमन यादव। फोटो : हरिभूमि

ममता, करुणा और त्याग का प्रतीक है मां : चेयरमैन

झज्जर। संस्कारम स्कूल पाटौदा में शनिवार को आयोजित मातृ दिवस कार्यक्रम की शुरुआत मां की महिमा पर प्रकाश डालते हुए की गई। नर्सरी से पांचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने गीतों, पोस्टर, भाषण, कविता पाठ तथा रंगारंग नृत्य प्रस्तुतियों के माध्यम से मां की महिमा का गुणगान किया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित संस्कारम समूह के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल यादव ने अपने संबोधन में कहा कि मां केवल एक शब्द नहीं बल्कि प्यार, ममता, करुणा और त्याग का प्रतीक है। मां का प्रेम संसार का सबसे पवित्र और अमूल्य प्रेम है। उन्होंने बच्चों को अपने माता-पिता का सम्मान करने, उनकी सेवा करने तथा सदैव उनका आशीर्वाद प्राप्त करने की सीख दी। प्राचार्या श्वेता कौशिक ने कहा कि मां के बिना जीवन की कल्पना भी असंभव है। मां ही वह पहली व्यक्ति होती है जो हमें इस दुनिया में लाती है, हमारा पालन-पोषण करती है।

झज्जर। शिक्षकों के साथ उपस्थित प्रतिभागी। फोटो : हरिभूमि

निबंध लेखन व ग्रीटिंग कार्ड मेकिंग में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। इंडो-अमेरिकन स्कूल में मदर्स-डे के उपलक्ष्य में विभिन्न रचनात्मक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। नौवीं से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए मां का हमारे जीवन में महत्व विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता, पहली से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए ग्रीटिंग कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता परिणामों में ग्रीटिंग कार्ड मेकिंग में पहली से वंदना प्रथम, हेजल द्वितीय तथा कुशा तृतीय स्थान पर रहीं। दूसरी कक्षा में ईशानवी एवं आदि ने प्रथम, ऋद्धि एवं अविश्का ने द्वितीय तथा दिविशा एवं सुहानी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। तीसरी कक्षा में मानवी व ऋषिकां प्रथम, मानवी ध्रुव द्वितीय तथा देवन, लावण्या और तनिष तृतीय स्थान पर रहे। चौथी में पुलकित एवं जियांशी ने पहला, युवराज एवं दीप्ती ने दूसरा तथा युवराज एवं करिश्मा ने तीसरा स्थान हासिल किया। पांचवीं कक्षा में निकुंज एवं समक्ष प्रथम, केशव एवं रुद्र द्वितीय तथा मिधावी एवं काव्यांशी तृतीय रहे। छठी कक्षा में सनाया प्रथम, राशि द्वितीय तथा यशिका तृतीय रहीं। सातवीं में दिव्यांशी प्रथम, ख्वाहिश द्वितीय तथा कनिष्का एवं शगुन तृतीय स्थान पर रहीं। आठवीं में भारती ने पहला, खुशी ने दूसरा व मान्य तथा बिनिता ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। निबंध लेखन प्रतियोगिता में नौवीं कक्षा में सोनम एवं दिव्यांशी ने प्रथम, आदित्य सोनी एवं करणप्रीत ने द्वितीय तथा नारायण एवं दीक्षा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। दसवीं कक्षा में लावण्या प्रथम तथा निशू द्वितीय स्थान पर रहीं। बारहवीं कक्षा में बेबू ने प्रथम, दीपिका सहरावत ने द्वितीय तथा वंशिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

न्यूज डायरी

झज्जर। मातृ दिवस समारोह में अपने बच्चों के साथ उपस्थित महिला अभिभावक।

गीत-संगीत से माताओं के प्रति जताया सम्मान

झज्जर। प्रगति सैनिक स्कूल में शनिवार को मातृ दिवस समारोह मनाया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने गीत, नृत्य एवं कविता प्रस्तुत कर अपनी माताओं के प्रति प्रेम और सम्मान व्यक्त किया। कार्यक्रम में आयोजित विभिन्न गतिविधियों में महिला अभिभावकों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यालय के निदेशक अजीत खत्री एवं प्राचार्या अंजलि ने कहा कि मां बच्चों की प्रथम गुरु होती है और उनके उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

झज्जर। गीतों पर नृत्य की प्रस्तुति देते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

विद्यार्थियों को मां की महिमा से अवगत करवाया

झज्जर। चंद्रबल मॉडर्न स्कूल में शनिवार को मातृ दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विद्यार्थियों ने गीत, कविता, नृत्य और भाषण की प्रस्तुति देककर अपनी माताओं के प्रति प्रेम और सम्मान व्यक्त किया। विद्यालय के संस्थापक एवं एमडीयू के पूर्व कुलपति विवेक चंद्र शर्मा ने विद्यार्थियों को मां के महत्व से अवगत कराते हुए कहा कि मां त्याग, करुणा व ममता का भंडार होती है। वह अपने बच्चों की प्रथम शिक्षिका भी होती है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपनी माता का सम्मान करने के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों ने मां शीर्षक से संबंधित गीतों पर नृत्य कर समां बांधा।

झज्जर। कार्यक्रम में शिक्षिकाओं के साथ उपस्थित महिला अभिभावक।

गायन में रीना, पूनम व भावना ने बांधा समां

झज्जर। आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में मातृ दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिला अभिभावकों ने भाग लिया। महिला अभिभावकों के लिए आयोजित नृत्य प्रतियोगिता में मनीषा, सोनिया, कामिनी, सुषमा, मोनिका और निर्मला ने शानदार प्रस्तुतियां देकर सभी का मन मोह लिया। गायन प्रतियोगिता में रीना, पूनम और भावना कौशिक ने मधुर गीतों से समां बांधा। पाक-कला प्रतियोगिता में चंचल, पूजा, उषा, अनीता आदि महिला अभिभावकों ने स्वादिष्ट व्यंजन प्रस्तुत किए। विद्यार्थियों ने भी अपनी माताओं को समर्पित सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर माहौल भावुक बनाया। शिक्षा समिति सदस्या शीजू गहलावत तथा प्राचार्य जयप्रकाश यादव ने मातृ शक्ति के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में शामिल सभी महिला अभिभावकों को सम्मानित भी किया गया।

झज्जर। कार्यक्रम में शामिल महिला अभिभावकों को पुरस्कृत करतीं शिक्षिकाएं।

मां के प्रेम, त्याग और ममता को किया नमन

झज्जर। महर्षि दयानंद स्कूल खुड्डन में शनिवार को मातृ दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नन्हे विद्यार्थियों ने गीत, कविताएं और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से मां के प्रेम, त्याग और ममता को भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में माताओं और दादी मांओं के लिए विशेष पेरेंट्स एक्टिविटी का आयोजन भी किया गया जिनमें म्यूजिकल चेयर रेस, सोचो और जल्दी जवाब दो, बच्चों के साथ खेल गतिविधियां तथा मां-दादी मां के साथ सबसे सुंदर सेल्फी प्रतियोगिता आकर्षण का केंद्र रहीं। विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। मुख्यातिथि डॉक्टर सुदर्शन पूनिया और कुलदीप आर्य ने मातृ शक्ति के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मां ही बच्चे की पहली गुरु और समाज निर्माण की आधारशिला होती है। इस मौके पर प्रबंधक समिति के रमेश डेरोलिया, सुरेंद्र कोडान, प्राचार्य रामनिवास गहलावत, अलका रानी, सुदेश पूनिया आदि रहे।

झज्जर। कार्यक्रम में महिला अभिभावकों के साथ निदेशिका संगीता कोडान।

माता का स्थान भगवान से भी बढ़कर : डीईओ

झज्जर। एमआर स्कूल, हसनपुर में शनिवार को मातृ दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ एमआर ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन्स के निदेशक सोमबीर कोडान व मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित डीईओ रतींद्र सिंह ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने बच्चों को सदैव अपने माता-पिता के प्रति सम्मान एवं प्रेम का भाव रखने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि माता का स्थान भगवान से भी बढ़कर होता है, इसलिए कभी भी अपने गलत कार्यों से उनका दिल नहीं दुखाना चाहिए। इस दौरान विद्यार्थियों ने मातृ प्रेम पर आधारित कविताएं, नाटक, एकल एवं समूह नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी।

बच्चे में ज्ञान का प्रकाश भरती है मां : अशोक शर्मा

झज्जर। कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक एवं अतिथि।

झज्जर। जीएवी संस्थान पाटौदा में मदर्स-डे के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था की डायरेक्टर रेखा शार्मा ने की। संस्था के फाउंडर अशोक शर्मा ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि मां का दर्जा भगवान से भी बढ़कर है। माता निर्माता होती है। हिंदू धर्म में मां को पृथ्वी से भी बड़ा बताया गया है। मां बच्चे में ज्ञान रूपी प्रकाश भरने का कार्य करती है। डायरेक्टर रेखा शर्मा व कॉलेज के प्राचार्य रामनिवास चौहान ने अपने-अपने विचारों में मातृदिवस को माताओं के निस्वार्थ प्रेम, त्याग और समर्पण को सम्मान देने के लिए समर्पित बताया। इस मौके पर स्कूल के प्राचार्य विपिन कुमार, संस्था हेड सुमिला यादव, सरिता तंवर, सविता शार्मा, मोनिका, पूजा, कोमल, मंजू, मोनिका देवी, देवेंद्र, रवि कुमार, मनजीत, आकाश, अनूप, किशोर, हरिओम सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

बहादुरगढ़। माताओं के सम्मान में प्रस्तुति देते फाउंडेशन स्कूल के विद्यार्थी।

फाउंडेशन स्कूल में मदर्स-डे पर थिरके नन्हे-मुन्ने

बहादुरगढ़। फाउंडेशन पब्लिक स्कूल में शनिवार को मातृ दिवस मनाया गया। स्कूल निदेशक हर्षदीप राठी व प्राचार्या मोनिका राठी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम शुरू किया। बाल वाटिका- एक, दो, तीन के सभी बच्चों ने स्वागत गीत से सभी माताओं का धन्यवाद किया। फिर उन्होंने कविताओं से सभी अध्यापकों व अभिभावकों का मन मोह लिया। प्रिंसिपल मोनिका राठी ने सभी पेरेंट्स से बच्चों को संस्कार देने का आह्वान करते हुए मातृ दिवस की बधाई दी। साथ ही बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करने की सलाह दी। मातृ दिवस समारोह का संचालन बाल वाटिका अध्यापिका आशा व सृष्टि ने किया।

जीडी गोयनका में मां के प्रति जताई श्रद्धा

- बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से मन मोह लिया

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

शहर की एचएल सिटी में स्थित जीडी गोयनका पब्लिक स्कूल में मातृत्व दिवस का आयोजन अत्यंत हर्षोल्लास, उत्साह और भावनात्मक गरिमा के साथ किया गया। विद्यार्थियों ने अपनी माताओं के प्रति प्रेम और श्रद्धा व्यक्त करते हुए रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं मां सरस्वती की वंदना के साथ हुआ। इसके पश्चात छात्रों ने स्वागत गीत, भावपूर्ण कविताएं, मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियां दी। मां पर आधारित प्रेरणादायक नाटिका प्रस्तुत कर उपस्थित माताओं को भावविभोर कर दिया। बच्चों की मासूम अभिव्यक्तियों और प्रस्तुतियों ने पूरे वातावरण को भावनात्मक बना दिया। स्कूल प्रधानाचार्या ने कहा कि मां बच्चों के जीवन की प्रथम गुरु होती हैं, जिनके संस्कार, स्नेह और मार्गदर्शन से ही बच्चों का व्यक्तित्व निखरता है। उन्होंने कहा कि मातृ शक्ति का सम्मान करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है। स्कूल निदेशिका शैलजा जून के सम्मान में विशेष संदेश प्रस्तुत किया गया। उनके स्नेह, सहयोग और सकारात्मक मार्गदर्शन को विद्यालय परिवार के लिए प्रेरणास्त्रोत बताया गया। स्कूल प्रबंधन ने बच्चों के सर्वांगीण विकास में उनके अतुलनीय योगदान के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। समारोह में माताओं के लिए विशेष रूप से मनोरंजक खेल, रचनात्मक गतिविधियां एवं सहभागिता कार्यक्रम हुए। विजेता माताओं को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

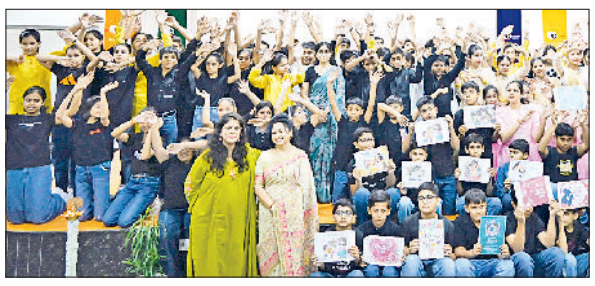

बहादुरगढ़। जीडी गोयनका में हुए कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ हर्षित माताएं।

एनडीए परीक्षा में संस्कारम के 26 विद्यार्थी सफल

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास के 26 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की लिखित परीक्षा में ऐतिहासिक सफलता हासिल कर संस्थान का नाम रोशन किया है। संस्कारम समूह के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने कहा कि इस उपलब्धि ने यह सिद्ध कर दिया है कि संस्कारम अब सैन्य अधिकारियों को तैयार करने वाली देश की सबसे भरोसेमंद संस्था है। घोषित परीक्षा परिणामों में अमन, प्रवीण, नैंसी, चिराग, साक्षी, यश, दिनेश, जिवेश, अक्षय, रवि, रोहित, अंजलि आदि ने सफलता हासिल की। एक ही साल में 26 छात्रों का चयन संस्थान की शिक्षा प्रणाली की मजबूती को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि सफल विद्यार्थियों में शामिल नैन्सी ने अपनी जीत का श्रेय अपनी मां और स्कूल की अनुशासित कार्यप्रणाली को दिया। प्राचार्या डॉक्टर प्रीति गोयल ने इन सभी भावी अधिकारियों के लिए कैंपस के भीतर ही विशेष एसएसबी इंटरव्यू ट्रेनिंग का खाका तैयार किया है।

झज्जर। शिक्षकों के साथ उपस्थित एनडीए के सफल विद्यार्थी।

मदर्स-डे पर माताओं ने सुंदर कलाकृतियां की पेश

बहादुरगढ़। लडरावन में हुए कार्यक्रम में उपस्थित माताएं।

बहादुरगढ़। मदर्स डे के अवसर पर श्री स्वामी समर्थ इंटरनेशनल स्कूल में विशेष कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने गीत, कविता और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से मातृत्व के महत्व को दर्शाया। माताओं के योगदान को सराहते हुए उनके सम्मान में विशेष गतिविधियां आयोजित कीं। स्कूल चेयरमैन अभिषेक छिल्लर ने सभी माताओं को सम्मान देते हुए कहा कि मां परिवार और समाज की सबसे बड़ी शक्ति होती है। विशेष कार्यक्रम के दौरान सभी माताओं ने अपनी-अपनी सुंदर कलाकृतियां प्रदर्शित कीं। प्रधानाचार्य ने सभी माताओं को उपहार देकर विदाई दी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

एनडीए में वंशिका, रूपेश, अभिषेक, नमित और वंश बने स्कूल के गौरव

एनडीए और वीआईटीईई में पेस संस्थान के विद्यार्थियों ने किया शानदार प्रदर्शन, प्रबंधन ने किया सम्मानित

झज्जर। होनहार विद्यार्थी को सम्मानित करते हुए स्कूल प्रबंधन कमेटी पदाधिकारी।

झज्जर। एनडीए के सफल विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

- रूपेश ने अखिल भारतीय रैंक 561 हासिल किया

शनिवार को घोषित हुए एनडीए लिखित परीक्षा और वीआईटीईई के परिणामों में पेस संस्थान के विद्यार्थियों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। पेस ग्रुप के डायरेक्टर जय विकास ने बताया कि एनडीए की लिखित परीक्षा में वंशिका, रूपेश, अभिषेक, नमित और वंश ने सफलता हासिल कर संस्थान का गौरव बढ़ाया। रूपेश ने अखिल भारतीय रैंक 561 हासिल किया। इनके अलावा आदित्य, सौम्य कादियान, अमन व अंजिता ने भी बेहतरीन रैंक के साथ सफलता प्राप्त की। वीआईटीईई में आदित्य और अमन ने सफलता हासिल की जो संस्थान की शिक्षिका गीता व सुदेश के बच्चे हैं। इस मौके पर पेस ग्रुप के चेयरमैन युद्धवीर, डायरेक्टर जय विकास, मैनेजिंग डायरेक्टर हरीश, संदीप, सुमित चावला तथा अश्वनी सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

एचडी स्कूल साल्हावास के पांच विद्यार्थी एनडीए में सफल

झज्जर। एनडीए के घोषित परिणामों में एचडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास के विद्यार्थियों ने सफलता हासिल कर संस्थान का गौरव बढ़ाया है। इनके अलावा छात्र दीक्षित मान ने सीडीएस क्वालिफाई कर जिले का नाम रोशन किया है। एचडी ग्रुप डायरेक्टर रमेश गुलिया ने बताया कि एनडीए क्वालिफाई करने वाले विद्यार्थियों में नवदीप यादव, सार्थक शर्मा, साक्षी, पायल यादव व अंकित शामिल है। उन्होंने इस उपलब्धि पर एनडीए कोचिंग टीम के प्रमुख रोहताश बल्हारा के प्रयासों की सराहना भी की। विद्यालय की इस उपलब्धि पर एचडी ग्रुप सचिव विशाल नेहरा, हेमंत गुलिया व प्राचार्या प्रीति राठी ने सभी उत्तीर्ण विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

कैंब्रिज स्कूल के छात्र अभिनव ने पाई एनडीए में सफलता, स्कूल व परिवार में जश्न का माहौल

झज्जर। कैंब्रिज इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भदाना के 12वीं कक्षा के छात्र अभिनव ने एनडीए परीक्षा में सफलता हासिल कर स्कूल का नाम रोशन किया है। विद्यालय निदेशक धर्मेंद्र जून ने इस उपलब्धि पर विद्यालय स्टाफ, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को बधाई देते हुए अभिनव के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि प्रतियोगी परीक्षाओं में लगातार सफलता प्राप्त करना विद्यालय के लिए अत्यंत गौरव एवं सम्मान का विषय है।

मातृ दिवस विशेष

मां की ममता, उसके प्रेम, उसके समर्पण और उसके त्याग की कोई सीमा नहीं होती है। हर हाल में अपनी संतान का हित, उसके सुख और उसकी खुशी की कामना करने वाली मां की महानता का कितना भी बखान किया जाए कम ही होगा। आइए आज मातृ दिवस के अवसर पर हम सब संकल्प करें कि अपनी मां को हमेशा खुश रखेंगे, उनकी हर इच्छा को पूरा करने का प्रयास करेंगे।

आवरण कथा
सरस्वती रमेश

मां त्याग-प्रेम की मूरत है सबसे अनमोल

प्रकृति की हर कृति अपने आप में अनूठी और अनमोल है। लेकिन मां की बात ही कुछ अलग है। मां को प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ कृति कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। मां की ममता के समक्ष दुनिया के सारे ऐशो-आराम, स्वर्गीय सुख, चमक-दमक फीके हैं। मां के स्नेह में, ममता में जो सुख, तृप्ति और सुकून होता है, उसे दुनिया की कोई शय नहीं दे सकती। इसीलिए उस शख्स को दुनिया में सबसे खुशनसीब माना जाता है, जिसके सिर पर मां की ममता का साया होता है। सच कहें तो मां की उपस्थिति, स्वर्ग से भी अधिक आलौकिक अनुभूति देती है। मां की इस दिव्यता को, विशेषता को मुनव्वर राणा ने अपने एक शेर में यूं समेटा है-

चलती-फिरती हुई आंखों से अज़ां देखी है
मैंने जन्नत तो नहीं देखी है, मां देखी है।

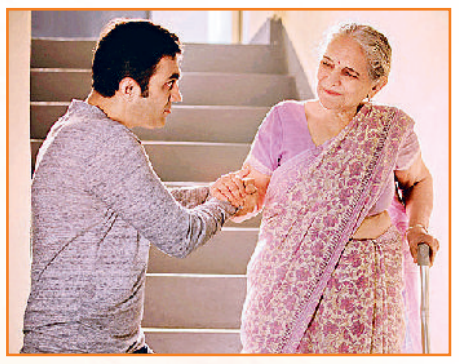

भावनाओं का दरिया है मां: हर मां के हृदय में भावनाओं का दरिया उमड़ता रहता है। यही भावनाएं मां और उसकी संतान के मध्य अनिर्वचनीय रिश्ता कायम करती हैं। एक ऐसा रिश्ता, जिसमें संसार के सभी रिश्तों की तासीर को महसूस किया जा सकता है। एक मां की उसके संतान के प्रति जैसी तड़प, प्रेम, चिंता, समर्पण और त्याग की भावना होती है, ऐसी भावना किसी और रिश्ते-नाते में नहीं देखी जा सकती है। मां अपने बच्चे की सिर्फ जन्मदात्री नहीं होती। वह उसकी प्रथम गुरु, संरक्षक, दोस्त, पालनकर्ता और मार्गदर्शक भी होती है। एक बच्चे को अपनी मां से वह सब कुछ मिलता है, जिसकी उसे वर्तमान में जरूरत है और भविष्य में जरूरत पड़ने की संभावना होती है। वैसे तो बच्चे के इर्द-गिर्द ढेर सारे संबंधों की कतार होती है। लेकिन अपनी मां से उसे जो प्राप्त होता है, उसकी भरपाई दुनिया का कोई भी रिश्ता नहीं कर सकता। नेल्सन मंडेला के शब्दों में कहें तो, 'मां का प्यार सबसे ऊंचा, अशेष और अनपेक्षित होता है।'

रुई के फाहे सा स्नेह: मां का प्यार, उसका स्नेह रुई के फाहे जैसा मुलायम और निर्दोष होता है। वह बच्चे की जरा-सी चोट पर विह्वल होने लगता है। बच्चे को जरा सी भी तकलीफ हो तो मां का मन विचलित होने लगता है। उसका प्यार देखना हो तो उसकी चिंताओं को गौर से देखिए। बच्चे की हर पल की जरूरतों के लिए मां किस हद तक फिक्रमंद होती है। उसकी दिनचर्या का निर्धारण बच्चे की जरूरतों के हिसाब से तय होता है। यहां तक कि उसके सोने-जागने का भी। एक लड़कोरी (नवजात की मां) की नींद कभी पूरी नहीं हो पाती। वो टुकड़ों-टुकड़ों में सोती हैं। बच्चे की रोने की एक आवाज पर अपने खाने की थाली सरका कर उसे पहले दूध पिलाती है। बीमार बच्चे की देख-रेख करने में तो मां अपनी भूख, प्यास, नींद तक बिसरा देती है।

कामयाबी के पीछे मां की भूमिका: किसी इंसान की कामयाबी में उसकी मां की भी भूमिका होती है। ज्यादातर सफल और महान लोगों की कामयाबी के पीछे उनकी मांओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दुनिया में ऐसे बेशुमार उदाहरण हैं। अमेरिका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपने संस्मरण में अपनी मां की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में लिखा है,'मेरी मां ने मुझे शिक्षित करने और मेरे भीतर आत्मविश्वास भरने के लिए बहुत मेहनत की। दिन में वह काम पर जाती थीं, इसलिए भोर में चार बजे उठकर मुझे पढ़ाती थीं। हमारी जिंदगी के तमाम उतार-चढ़ाव के बावजूद, मेरी मां ने मुझे हर पल खास महसूस कराया।' ऐसा ही एक और उदाहरण महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन के जीवन में भी देखा जा सकता है। उनके महान आविष्कार को सारी दुनिया जानती है। मगर बहुत कम लोगों को पता होगा कि जब वह छोटे थे, तो आम बच्चों की तरह समझदार नहीं थे। उनके अध्यापक उन्हें हमेशा मंदबुद्धि कहते थे। जब उनकी मां, नैंसी को यह बात पता लगी तो वो उन्हें स्कूल से निकाल लाईं और घर पर ही पढ़ाने लगीं। कई साल बाद एडिसन ने अपनी डायरी में लिखा, 'मेरी मां ने ही मुझे बनाया। वह बहुत सच्ची थीं। मुझ पर अथाह भरोसा करती थीं। उनके स्नेह को पाकर मुझे लगा कि मेरे पास भी जीने की कोई वजह है। उन्हें मैं निराश नहीं कर सकता था।'

एक मंदबुद्धि बच्चा एक मां के संकल्प, हौसले और स्नेह की बदौलत उस सदी का जीनियस बन गया। उस मां ने अपने मंदबुद्धि बेटे से घृणा नहीं की। उससे प्रेम किया और उस पर विश्वास किया। मां के स्नेह और विश्वास में चमत्कारिक शक्ति होती है, जो संतान के जीवन को संवार देती है। कामयाबी की ऐसी लाखों कहानियां हैं, जिनके पीछे एक मां का यही विश्वास और अथाह प्रेम है।

मां कभी नहीं बदलती: दुनिया पल-पल बदलती रहती है, लेकिन मां जैसी सदियों पहले हुआ करती थीं, अब भी वैसी ही होती हैं। यानी सदियां गुजर गईं लेकिन अपनी संतान के प्रति मां का प्यार, लगाव और समर्पण बरकरार है। अपने बच्चों को सीने से लगाने वाली, आंचल में सहेजने वाली, उनकी सुरक्षा के लिए ढाल बन जाने वाली और उनकी हर गलती को क्षमा कर देने वाली मां की ममता का मोल नहीं है। लेकिन दुःखद है कि आधुनिकता, स्वार्थी सोच के प्रभाव में कई संतानों का व्यवहार अपनी मां प्रति बदल जाता है।

सोचने वाली बात है कि आखिर जब सदियों में मांओं का अपनी संतान से जुड़ाव नहीं बदला तो संतानों का व्यवहार मां के प्रति क्यों बदल गया? ऐसा क्या हो गया कि सभ्यता के विकास ने हमें ऐसी तहजीब सिखाई, जिसने मां का सम्मान करना भुला दिया? दरअसल, सच यह है कि विकास की चकाचौंध में हम निहायत आत्मकेंद्रित और स्वार्थी होते गए हैं। हम मां की ममता जैसे अमूल्य भाव का सम्मान करना भी भूल गए।

मदर्स-डे की महत्ता: संतोष की बात है कि हमारी इस गलती का एहसास कराने के लिए, जीवन में अपनी मां की महत्ता को याद दिलाने के लिए वर्ष में एक दिन मुकर्रर किया गया है। जिसे हम मदर्स-डे के नाम से मनाते हैं। हालांकि मां अपने बच्चों से हर दिन प्रेम, सम्मान व आत्मीयता की हकदार है। बुढ़ापे में जब उसकी हड्डियां कमजोर पड़ जाती हैं, नजर धुंधली हो जाती है और हाथ कांपने लगते हैं, तब उसे अपने बच्चों का साथ व सहारे की जरूरत होती है। ऐसे में मदर्स-डे हमें 'मां' की उस अमूल्य ममता की याद दिलाता हैं। तो आज मदर्स-डे मनाते हुए हम जरूर संकल्प करें कि हम मां को भरपूर प्यार सम्मान न केवल आज, हर दिन देंगे। उसके चेहरे पर मुस्कान लाने का हर संभव प्रयास करेंगे। *

अनुभूति / डॉ. ऋतु सारस्वत

मां के नाम बेटे की पाती

मां अपने बच्चों को केवल पालती-पोसती ही नहीं, बहुत सरल-सहज तरीके से उसके भीतर संस्कारों के बीज भी रोप देती है। इसका एहसास कई बार वर्षों बाद बच्चे को होता है। अपनी मां के प्रति एक बेटा ऐसी ही भावानुभूतियां पत्र के जरिए यहां व्यक्त कर रहा है।

मेरी प्यारी मां

जीवन में पहली बार आपको कुछ लिखकर भेज रहा हूं। सच कहूं तो समझ में नहीं आ रहा कि कहां से शुरुआत करूं? न जाने कितनी बार लिखा और मिटाया है, हर बार लगता है कि मेरे पास कहने के लिए हजारों शब्द हैं, पर उन्हें एक-दूसरे से जोड़ ही नहीं पा रहा। पता है मां, आज मैं बाजार गया था। पढ़ते-पढ़ते थक गया था, सोचा यूं ही थोड़ा घूम लूं। तभी मेरी नजर एक दुकान में रखे बिंदी के छोटे से पैकेट पर पड़ी और मैंने बिना कुछ सोचे ढेर सारी बिंदियां खरीद लीं। जैसे ही उन्हें हाथों में लिया, यूं महसूस हुआ जैसे आपके ममतामयी हाथ मुझे स्पर्श कर रहे हों। आपकी मुस्कुराहट मेरी आंखों के सामने घूमने लगी और मन किया कि दौड़कर आऊं और आपको जोर से गले लगा लूं। मां , आपकी बहुत याद आ रही है। मां, मुझे आज भी याद है, जब भी आप कहीं बाहर से लौटकर घर आती थीं, तो मैं दौड़कर आपकी गोद में चढ़ जाता था। सबसे पहले आपके माथे से आपकी बिंदी उतार देता था। आप हैरान होकर पूछती थीं- 'बेटा, ऐसा क्यों करते हो?' मैं मासूमियत से कह देता था- 'अगर आपके माथे पर बिंदी लगी रही, तो आप फिर से बाहर चली जाओगी' आप मुस्कुरा देती थीं। मैं आपके और करीब सिमट जाता था। पर मां, बिंदी की यह कहानी यहीं तक नहीं थी। एक दिन मैं बहुत गुस्से में स्कूल से घर लौटा था, क्योंकि मेरी गलती न होने पर भी मेरी टीचर ने मुझे बहुत डांटा था। गुस्से में मैंने कह दिया, 'मेरी टीचर बहुत गंदी है' आपने तुरंत मुझे रोका और समझाया कि बड़ों के लिए ऐसे शब्द नहीं बोलते। फिर आपने मुस्कुराकर कहा, 'और अगर शिकायत करनी भी है, तो कम से कम 'बिंदी' तो लगा लो ' आपकी यह बात सुनकर मैं टकटकी लगाकर आपको देखने लगा और मासूमियत से पूछ बैठा, 'तो क्या मां, मुझे किसी की शिकायत करने के लिए खुद बिंदी लगानी होगी?' आप मेरी बात सुनकर हंस-हंसकर लोट-पोट हो गईं और फिर बोलीं, 'अरे बुद्धू, मैं तुम्हें बिंदी लगाने के लिए नहीं कह रही और तुम बिंदी लगाओगे भी कैसे, तुम तो अभी छोटे से बच्चे हो।' मैंने भी तुरंत कहा, 'मां, मैं छोटा तो हूं ही पर मैं तो लड़का हूं, मैं बिंदी कैसे लगा सकता हूं!' मेरी यह बात सुनकर आप फिर जोर-जोर से हंसने लगीं और मैं थोड़ा खिसियाकर बोला, 'मां, प्लीज बताओ ना' तब आपने बड़े प्यार से समझाया, 'देखो, 'है' के ऊपर जब बिंदी लगती है, तो वह 'हैं' बन जाता है, और बड़ों के लिए हमेशा हमें सम्मानजनक शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। 'वह आ रही है' हम अपने किसी दोस्त के लिए कह सकते हैं, लेकिन अगर किसी बड़े के लिए कहना हो, तो हमें कहना चाहिए 'वह आ रही हैं।' और ऐसे ही न जाने आपने मुझे कितने उदाहरण देकर समझाया।

मां, पता नहीं आपके शब्दों में क्या जादू था कि उसके बाद मैं कभी यह 'बिंदी' लगाना भूल ही नहीं पाया। मेरी हर बात में, हर संबोधन में अनजाने में ही वह सम्मान जुड़ता चला गया। आपकी यह 'बिंदी' सच में कमाल की है। मां ,यह मुझे बहुत बार बिल्कुल अजनबियों के भी करीब ले आती है। हमारे कॉलेज के चौकीदार भैया हों या कमरे में सफाई करने वाली आंटी जब भी मैं उनसे आदर से बात करता हूं, उनके चेहरे पर जो मुस्कुराहट आती है, वह मेरे मन को एक अलग ही सुकून देती है। एक दिन आंटी ने कहा, 'भैया, आप बहुत अच्छे हैं' और उनके ये शब्द सुनकर मुझे ऐसा लगा जैसे तेज गर्मी में अचानक बारिश हो गई हो। मां, मैं बहुत दिनों से आपको यह बताना चाह रहा था कि आपकी यह 'बिंदी' सचमुच बहुत अच्छी है पर कभी मौका ही नहीं मिला। आज जब इस बिंदी के छोटे से पैकेट को हाथ में लिया, तो लगा जैसे किसी ने मेरे हाथ में कलम थमा दी हो और जो बातें इतने दिनों से मन में थीं, वे अपने आप शब्द बनकर बहने लगीं। मां, सच कहूं आपकी यह 'बिंदी' सिर्फ आपके माथे पर लगकर आपको सुंदर नहीं बनाती बल्कि यह मेरे जीवन का सबसे खूबसूरत संस्कार बन गई है, जो हर रोज मुझे एक बेहतर इंसान बनने की राह दिखाती है।

थैंक यू सो मच मां!

-आपका बेटा

गजल / डॉ. ओम निश्चल

मां का प्यार

तुम से लिपट कर सो जाऊं मां
तो दुनिया का सुख पाऊं मां।
गोद तुम्हारी ममता का गढ़
कैसे इसको झुठलाऊं मां।
पुलकित दृष्टि तुम्हारी देखूं
आंखों में ही खो जाऊं मां।
चुपके-चुपके जो गाती हो
उस रुनझुन पर बलि जाऊं मां।
मां का प्यार अलौकिक होता
किस-किस को यह बतलाऊं मां।
मुझे छुपा लो अब आंचल में
इसी सृष्टि में रम जाऊं मां।

एआई इमेज

लघुकथाएं

स्वाद मां के हाथों का

मां के हाथ के गट्टे की सब्जी का जवाब ही नहीं!' मुंह में एक कौर डालते हुए शोभा के पति राकेश बोल पड़े।

'मैं कितना भी अच्छा खाना बना लूं, पर पता नहीं क्यों इनके मुंह से मेरी प्रशंसा के एक शब्द भी नहीं निकलते?' यह सोचकर शोभा के मन में कहीं ना कहीं अपनी सासू मां के प्रति ईर्ष्या के भाव बने रहते। उसकी सासू मां इन बातों से अनभिज्ञ आए दिन अपने बेटे के लिए नए-नए पकवान बनाती रहतीं। एक बार शोभा के पिताजी की तबियत ज्यादा खराब हो गई। आनन-फानन में वह मायके चली गई। अपने आठ वर्षीय बेटे को भी साथ नहीं ले जा पाई, क्योंकि उसके एग्जाम चल रहे थे। करीब दस दिन वह अपने मायके में रही। पिताजी की तबियत में सुधार होते ही वह अपने घर लौट आई। जैसे ही वह घर आई, उसका बेटा उससे लिपट गया और बड़ी ही मासूमियत से बोला, 'मम्मा आप इतने दिनों के लिए क्यों चली गई थीं? मुझे दादी के हाथ का खाना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था।' 'वो क्या है न बहू, बच्चों को अपने मां का हाथ का खाना ही अच्छा लगता है, क्योंकि बच्चा शुरू से ही अपनी मां के हाथ का खाना ज्यादा खाता है। इसलिए उसके मुंह में वहीं स्वाद चढ़ जाता है। इसके अलावा मां का स्नेह और अपनापन भी तो उस खाने में शामिल होता है।' उसकी सासू मां ने सहज स्वर में कहा। 'इतनी छोटी-सी बात वह कैसे नहीं समझ पाई और बेवजह मां-बेटे से हमेशा चिढ़ती रही।' शोभा मन ही मन में बोली। शोभा के पति उसकी भाव-भंगिमा देखकर उसके अंदर चल रहे भावों को भांप गए। इसलिए उसे देखकर मुस्कुराते हुए बोले, 'तुम भी बहुत अच्छा खाना बनाती हो, वो तो मैं तुम्हें चिढ़ाने के लिए तुम्हारे सामने मां की तारीफ करता रहता हूं।' 'अच्छा...जाइए मैं आपसे बात नहीं करूंगी।' कहकर वह गुस्से में अपने कमरे में चली गई। इस पर राकेश भी उसे मनाने के लिए उसके पीछे-पीछे कमरे में पहुंच गए। *

-शीला श्रीवास्तव

पैसे हैं पर मां नहीं

साहब, मेरी पासबुक देखकर बताइए, क्या खाते में पैसे आए हैं?' बूढ़ी महिला ने गिड़गिड़ाते हुए बैंक क्लर्क प्रमोद से विनती की। 'मांजी, आप से कितनी बार कहा कि आपके खाते में बैलेंस ही नहीं है!' प्रमोद झुंझला कर बोला। 'साहब, मैं बहुत गरीब हूं। खाने-पीने के भी पैसे नहीं हैं। मेरा बेटा हर महीने मुझे तीन हजार रुपए भेजता है।' बूढ़ी औरत रोते हुए बोली। 'भेजता रहा होगा, लेकिन पिछले तीन महीनों से उसने एक भी रुपया नहीं भेजा है, माता जी। मैं आपको पैसे कहां से दे दूं?' प्रमोद झल्लाते हुए बोला। उसकी तेज आवाज सुनकर मैनेजर रूपांग मेहता ने अपने केबिन से बाहर आकर पूछा, 'क्या बात है प्रमोद, मांजी को क्या परेशानी है?' 'सर, ये मांजी रोज आकर बैलेंस चेक करने को कहती हैं। इनके खाते में पैसा ही नहीं है, मैं क्या करूं?' प्रमोद ने जवाब दिया। मेहता साहब ने बूढ़ी महिला की ओर देखा। लगभग सत्तर साल की उस महिला की फटी साड़ी, टूटा चश्मा और हाथ में लाठी, उनकी गरीबी को बयां कर रही थी। 'मांजी, आप रोज क्यों आती हैं?' मेहता साहब ने पूछा। वह बूढ़ी महिला बोली, 'मेरा नाम सविता है साहब। दस साल पहले मेरे पति की शराब पीने की वजह से मौत हो गई थी। मैंने चार घरों में काम करके अपने बेटे मयंक को पढ़ाया और उसे कंप्यूटर इंजीनियर बनाया। पिछले साल उसकी शादी हुई और अब वह बेंगलुरु में नौकरी करता है। वह हर महीने तीन हजार रुपए भेजता था, लेकिन तीन महीने से खाते में पैसे आ ही नहीं रहे है। लगता है शायद पैसे गलती से किसी और खाते में जा रहे होंगे। मेरे पास दवा और खाने के भी पैसे नहीं हैं। आंखों में भी मोतियाबिंद है, काम भी नहीं हो पाता।' यह कहते हुए सविता रो पड़ी। मेहता साहब का दिल भर आया। उन्होंने पूछा, 'क्या आप के पास बेटे का नंबर है?' सविता ने एक मुड़ा-तुड़ा कागज उनकी ओर बढ़ा दिया। मेहता साहब ने उस नंबर पर फोन लगाया। दूसरी ओर से फोन उठा तो वह बोले, 'हैलो, मयंक से बात करवा दीजिए।' दूसरी तरफ से किसी महिला ने पूछा, 'मैं उनकी पत्नी माया बोल रही हूं, मयंक बाहर गए हैं। आप कौन बोल रहे हैं?' 'मैं बिलासपुर से बैंक मैनेजर रूपांग मेहता बोल रहा हूं। आपकी सास यहां आई हुई हैं, मयंक ने तीन महीने से उन्हें पैसे नहीं भेजे क्या?' 'अरे सर, कब तक पैसे भेजते रहेंगे उनको? हमारी भी जरूरतें हैं। हम लोग सिंगापुर घूमने का प्लान बना रहे हैं।' माया ने बेरुखी से कहा। 'लेकिन मांजी के पास खाने और दवा के पैसे भी नहीं हैं!' मेहता साहब थोड़ा तल्खी से बोले। 'तो हम क्या करें? क्या हमने उनका ठेका ले रखा है? कहीं भी चली जाएं, किसी वृद्धाश्रम में क्यों नहीं चली जातीं?' इतना कहकर माया ने फोन काट दिया। यह सुनकर मेहता साहब स्तब्ध रह गए। कैसे बेटे-बहू हैं? उन्होंने माताजी से बिना कुछ कहे अपने खाते से तीन हजार रुपए निकाले और सविता को देते हुए कहा, 'लो मांजी, आपके बेटे ने पैसे भेज दिए हैं।' सविता की आंखों में खुशी के आंसू छलक उठे, 'भगवान आप का भला करे।' कह कर वह रो पड़ी। 'अब आप का बेटा हर महीने पैसे भेजेगा।' मेहता साहब बोले। सविता खुश होकर चली गई। उनके जाने के बाद प्रमोद ने आश्चर्य से पूछा, 'सर, आपने अपने पास से पैसे दे दिए?' मेहता साहब भावुक होकर बोले, 'मैं भी गरीब परिवार से हूं। मेरे पिता की मृत्यु के बाद मेरी मां ने मजदूरी करके मुझे पढ़ाया। मैं सोचता था कि जब पैसे कमाऊंगा तो मां के सारे सपने पूरे करूंगा। लेकिन सात साल पहले जब मेरी नौकरी लगी तभी मेरी मां चल बसीं। जब मां थी, तब पैसे नहीं थे और आज पैसे हैं, पर मां नहीं हैं। इसीलिए इस मां की बेबसी मुझसे देखी नहीं गई।' *

-वीरेंद्र बहादुर सिंह

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

ताकि बचा रहे आदमीपन

हाल में युवा कवयित्री रूपम मिश्र का दूसरा कविता संग्रह 'हंसी और देस' प्रकाशित होकर आया है। ये कविताएं हमारे समय, समाज और देश की तमाम स्याह-श्वेत छवियां उजागर करती हैं। देशज भाषा के रचाव और लोकजीवन के राग ने इन कविताओं के निहितार्थ को और भी प्रभावी बना दिया है। *'जीत के आसार न देखते हुए भी लड़ना/ लड़ाई की परंपरा को जिंदा रखना था।'* जैसी पंक्तियां उस सतत संघर्ष को प्रतिबिंबित करती हैं, जो आदमीपन को बचाए रखने के लिए जरूरी है। यहां स्त्री विमर्श की कोरी नारेबाजी नहीं, सदियों पुरानी उस कंडीशनिंग की पड़ताल की गई है, जिसने स्त्रियों के एक वर्ग को चेतनाशून्य बनाकर हर हाल में पुरुषों की सेविका बनने को बाध्य कर रखा है। *'जो मार खा लेती हैं फिर उठकर उन्हीं मर्दों के लिए सबसे अच्छा अचार/सबसे ज्यादा स्वाद वाली सब्जी बना देती हैं।'* प्रेम को भी रूपम, बनी-बनाई परिभाषा से इतर बिल्कुल अलग भावभूमि पर उतरकर महसूसती और व्यक्त करती हैं। इसकी बानगी *'हमने देखा एक-दूसरे को ऐसे जैसे/भूख की यातना में जिया मनुष्य रोटी को देखता हो।'* जैसी पंक्तियों में देखी जा सकती है। *

पुस्तक: हंसी और देस (कविता संग्रह), **लेखिका:** रूपम मिश्र,
मूल्य: 250 रुपए, **प्रकाशक:** लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज

नैसर्गिक सौंदर्य से समृद्ध खूबसूरत देश किर्गिस्तान

घूमना किसे अच्छा नही लगता! खासकर जब नैसर्गिक सौंदर्य से समृद्ध देश में जाने का अवसर मिले। मध्य एशिया में स्थित किर्गिस्तान ऐसा ही एक छोटा सा और बेहद खूबसूरत देश है। हाल में एक सप्ताह की किर्गिस्तान यात्रा से लौटीं लेखिका वहां के अनुभव साझा कर रही हैं अपनी जुबानी।

ट्रैवलॉग

सोनल भारद्वाज

आमतौर पर कहा जाता है कि दुनिया में यदि कहीं स्वर्ग है तो वह देश है स्विटजरलैंड। वैसे हमारा कश्मीर भी कौन सा कम है! लेकिन किस्मत से हाल में हमें एक नए स्वर्ग से रूबरू होने का अवसर मिला, जिसे किर्गिस्तान के नाम से जाना जाता है। इसे मध्य एशिया का स्विटजरलैंड कहते हैं। इस देश का 90 प्रतिशत इलाका पहाड़ी है, जबकि मात्र 10 प्रतिशत आवासीय। 7.50 मिलियन आबादी वाला यह देश सोता कम है, जागता ज्यादा है क्योंकि यहां सूरज शाम 7.30 से 8 के बीच ढलता है।

साफ-सुथरा शहर राजधानी बिश्केक: जब हमारी फ्लाइट ने किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक के एयरपोर्ट में लैंड किया तो वहां का मौसम बड़ा खुशगवार दिखा। तापमान मात्र आठ डिग्री। बारिश ने हमारा वहां स्वागत किया। अकसर अप्रैल-मई के महीने में वहां बारिश होती है। हल्की ठंड और बारिश की वजह से अप्रैल के महीने में हमें जुलाई-अगस्त का अनुभव हुआ।

एयरपोर्ट से बाहर जिस टैक्सी पर हम बैठे, उसका चालक थोड़ी-बहुत इंग्लिश जानता था, तो हमारा काम आसान हो गया। वैसे वहां के लोग भारतीय फिल्म कलाकारों के बहुत दीवाने हैं। टैक्सी ड्राइवर न केवल थोड़ी-बहुत हिंदी भी बोल ले रहा था बल्कि उसकी टैक्सी में भारतीय फिल्मों के गाने भी बज रहे थे, जिसे हम भी गुनगुनाने लगे।

परिश्रमी-अनुशासित लोग: बिश्केक में घूमने के दौरान हमने महसूस किया कि किर्गिस्तान के नागरिक मेहनती, अनुशासित और स्वच्छता-पसंद हैं। वे ट्रैफिक नियमों का पूरा पालन करते हैं, यही वजह रही है कि हमने जहां एक तरफ गाड़ियों की कतारें देखीं लेकिन कोई हॉर्न बजाता नहीं सुना। व्यस्ततम सड़कों पर जहां एक तरफ गाड़ियों के काफिले थे तो उसी रोड पर बच्चों को बेहिचक साइकिलिंग करते भी देखा। 4 से 5 साल तक के बच्चे भी आराम से सड़कों पर साइकिल पर घूमते मस्ती करते हुए दिखे, क्योंकि सब ट्रैफिक रूल का पालन करते हैं। इसलिए वहां दुर्घटना की संभावना भी काफी कम रहती है। वहां पार्कों में बहुत शांति, धैर्य के साथ ज्यादातर महिला पुरुष अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ बैठे बात करते नजर आते हैं। सड़क के बीचों-बीच पार्कों में चहलकदमी करना इस देश के लोगों को खूब पसंद है। बिश्केक शहर साफ-सुथरा दिखता है, इसकी बड़ी वजह है यहां किसी को गंदगी फेंकते या थूकते हुए देखे जाने पर पांच हजार रुपए का जुर्माना लगता है। शहर में कई बाग-बगीचे हैं। स्थानीय नागरिक इनका उपयोग टहलने, मनोरंजन करने और जॉगिंग करने में करते हैं।

तियान शान पर्वतमाला में स्थित इसिक कूल झील

दुनिया की सबसे बड़ी प्राइवेट मेडिकल यूनिवर्सिटी: एयरपोर्ट से होटल पहुंचने तक राजधानी बिश्केक की खूबसूरती के हमने कई नजारे देखे। भारतीय दूतावास पर अपना राष्ट्र ध्वज तिरंगा लहराते देखना, हमारी यात्रा का सबसे गौरवशाली दृश्य था। गीत याद आ गया, 'ऐ देश मेरे, तेरी शान पे सदके...।' कुछ ही देर में हम होटल पहुंच गए। चेकइन करने, फ्रेश होने के बाद हम इंटरनेशनल हायर स्कूल ऑफ मेडिसिन संस्थान (आईएचएसएम) के परिसर की ओर निकल पड़े। बताते चलें कि हम किर्गिस्तान, शैक्षणिक भ्रमण पर गए थे। रूस और किर्गिस्तान, विश्वस्तरीय शिक्षा संस्थान के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। इन्हीं में से एक इंस्टीट्यूट है आईएचएसएम। संस्थान के प्रबंधन ने हमारा स्वागत किर्गिस्तानी रिवाज से किया। स्थानीय युवाओं ने हमें लोकल फोक म्यूजिक 'अलदशपा' सुनाया तो हम सब झूम उठे। हमारी टीम ने वहां पर अध्ययनरत भारतीय विद्यार्थियों से देर तक मुलाकात की। इस संस्थान में भारतीय छात्रों के अलावा, अमेरिका, रूस, जॉर्जिया, चीन, पाकिस्तान जैसे देशों से छात्र एमबीबीएस करने आते हैं, क्योंकि चिकित्सा शिक्षा यहां पर ज्यादा सस्ती और सरल है। आईएचएसएम, किर्गिस्तान में सन 2003 में स्थापित प्राइवेट इंस्टीट्यूट्स में सबसे बड़ा संस्थान है। यहां कैंपस का माहौल, खान-पान, भाषा और संस्कृति, पूरी तरह हिंदुस्तानी परिवेश जैसा लगता है।

इसिक कूल झील-तियान शान पर्वतमाला: आईएचएसएम देखने के बाद हम तियान शान पर्वतमाला के विशाल पहाड़, दुनिया की सबसे ऊंचाई वाले इलाके में स्थित इसिक कुल झील और मनमोहक घाटियां देखने, वहां की सांस्कृतिक विरासत को महसूस करने के लिए लालायित थे। ऊंची पर्वतमालाओं के बीच टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुजरते हुए लगभग 4.30 घंटे के सफर के बाद हम इसिक कूल झील पहुंच गए। किर्गिज भाषा में इसीक्कुल का अर्थ होता है 'गरम झील' जो उत्तर-पूर्वी किर्गिस्तान में, तियान शान पर्वतमाला के बीचों-बीच स्थित है। यह कैस्पियन सागर के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। यह झील, गहराई के मामले में भी दुनिया में सातवें नंबर पर आती है। ऐतिहासिक प्रमाण बताते हैं कि झील की गहराई में 2,500 साल पुराने एक प्राचीन शहर के अवशेष मिले हैं, जो कभी सिल्क रूट (रेशम मार्ग) का एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र था। झील के अलावा यह क्षेत्र अपने क्रिस्टल-क्लियर पानी, बर्फ से ढंकी चोटियों, पैरासेलिंग व ट्यूबिंग जैसी रोमांचक गतिविधियों के लिए भी प्रसिद्ध है। हमने यहां काफी देर रुककर तियान शान और पामीर-अलाई पर्वतमालाओं के भी दर्शन किए। किर्गिज नागरिक प्रकृति से बेहद प्यार करते हैं इसलिए उन्होंने जंगल, पहाड़, नदियों को बचाए रखा है। यही नहीं स्थानीय नागरिकों के आवास भी हरियाली से सजे दिखाई देते हैं।*

भारतीय व्यंजनों का मिला आनंद

किर्गिस्तान का खान-पान पूरी तरह मांसाहार पर केंद्रित है, लेकिन राजधानी बिश्केक में 4 से 5 इंडियन रेस्टोरेंट भी हैं, जो भारतीयों द्वारा ही संचालित किए जा रहे हैं। यहां खाना बनाने वाले शेफ भी भारत से ही बुलाए गए हैं, ताकि भारतीय स्वाद यहां आने वाले छात्रों और अन्य लोगों को मिल सके। यहां पाकिस्तानी नागरिक भी काफी संख्या में हैं। किर्गिस्तान में ड्राय फ्रूट्स और फ्रूट्स बहुत अच्छी क्वालिटी के मिलते हैं, क्योंकि यहां की जमीन में लोग केमिकल उर्वरकों का इस्तेमाल नहीं करते हैं। किर्गिस्तान मूल रूप से मुस्लिम कंट्री है, लेकिन यह मुस्लिम देश होते हुए भी यह महसूस ही नहीं होने देता कि किसी एक परंपरा या धर्म से बंधा हो। किर्गिस्तान में महिला और पुरुष को समान दृष्टि से देखा जाता है, सभी को बराबरी का हक है। स्थानीय बाजारों में महिलाएं व्यापार करती खूब दिखाई देती हैं। अपनी यात्रा के अनुभव के आधार पर हम कह सकते हैं कि केवल नैसर्गिक सौंदर्य के मामले में ही नहीं महिला अधिकार और स्वतंत्रता के मामले में भी दुनिया के लिए किर्गिस्तान, आदर्श देश माना जा सकता है।

सेल्फ इंप्रूवमेंट

नरेंद्र कुमार

वर्कप्लेस कोई भी हो एंप्लॉई की इंपॉर्टेंस उसके वर्किंग स्टाइल और उसके बिहेवियर से तय होती है। अगर आप भी चाहते हैं कि वर्कप्लेस पर आप सबसे इंपॉर्टेंट एंप्लॉई माने जाएं तो आपको यहां बताए जा रहे सजेशंस को फॉलो करना होगा।

फॉलो करें ऐसी वर्किंग स्टाइल ऑफिस में बढ़ाएं अपनी इंपॉर्टेंस

हर वर्किंग प्रोफेशनल की यह चाहत होती है कि ऑफिस में उसकी इमेज, उसकी वैल्यू दूसरों से अच्छी हो। इंपॉर्टेंट एंप्लॉइज में उसकी गिनती हो। इंपॉर्टेंट एंप्लॉई बनने के लिए खुद को ऐसा बनाएं कि आपके बिना काम स्मूदली न हो पाए या कोई भी जरूरी फैसला लेते समय आपको उसमें शामिल करना जरूरी हो जाए। याद रखिए, यह पोजीशन किसी को खुद ब खुद नहीं मिल जाती बल्कि इस स्थिति में पहुंचने के लिए स्मार्ट और समझदारी से काम करना होता है। इसके अलावा आपमें कुछ क्वालिटीज का होना भी जरूरी है।

रिप्लेसेबल से इरिप्लेसेबल बनिए: हर दफ्तर के दो तरह के एंप्लॉई होते हैं, एक जो केवल अपना काम करते रहते हैं। दूसरे ऐसे एंप्लॉई जिनके बिना ऑफिस के कई काम अटक जाते हैं, कोई बड़ा फैसला नहीं लिया जा सकता है। आपको यह दूसरा कर्मचारी बनना है ताकि आपकी गिनती ऑफिस के सबसे महत्वपूर्ण एंप्लॉइज में हो। ऐसा बनने के लिए आपको कुछ बातें अमल में लानी चाहिए। जैसे दफ्तर में आपका जो दायित्व है, उसके एक्सपर्ट बन जाएं। ऐसी स्किल में कमांड हासिल करें, जो ऑफिस में दूसरे लोगों के पास न हो। ।

प्रॉब्लम सॉल्वर बनिए: दफ्तर में अधिकतर लोग समस्या बताने में माहिर होते हैं। लेकिन इंपॉर्टेंट एंप्लॉई उसे माना जाता है, जो बॉस को प्रॉब्लम तो बताए, साथ ही यह भी कहे कि इस प्रॉब्लम को कैसे सॉल्व किया जा सकता है। हर बॉस को अपने अंडर ऐसे सहयोगी चाहिए होते हैं, जो केवल प्रॉब्लम्स के बारे में ही न बताए, पर उन गलतियों को हल करने की काबिलियत भी रखे। अगर आपको ऑफिस में इंपॉर्टेंट बनना है तो प्रॉब्लम सॉल्वर बनिए, न कि प्रॉब्लम रिपोर्टर।

जिम्मेदार बनिए: जो भी काम आपको मिले, उसे जिम्मेदारी से पूरा करें। उसे न करने या टालने के बहाने न बनाएं। तय समय सीमा के भीतर अगर काम नहीं होता, तो काम करने का भी कोई महत्व नहीं रह जाता है। इसलिए डेडलाइन के भीतर काम पूरा करने की आदत डालें।

काम दिखना भी चाहिए: यह सच है कि अगर आप दिखेंगे नहीं, तो आप महत्वपूर्ण भी नहीं माने जाएंगे। इसलिए काम करें और दफ्तर में महत्वपूर्ण समय पर मौजूद रहें। अपने किए हुए काम की अपडेट उन लोगों तक पहुंचाएं, जिनको आपके द्वारा किए गए काम से मतलब है। बॉस के साथ होने वाली मीटिंग में बोलें और अपनी बात को संक्षिप्त और स्पष्ट तरीके से सबके सामने रखें। वैल्यू और विजिबिलिटी मिलकर ही किसी एंप्लॉई को उसके वर्कप्लेस में महत्वपूर्ण बनाती है।

बॉस के 'गो टू पर्सन' बनिए: हर दफ्तर में एक या दो लोग ऐसे होते हैं, जिन पर बॉस आंख मूंदकर भरोसा करते हैं, क्योंकि जब-जब मौका मिला, उन्होंने खुद को इसके लायक सही साबित किया होता है। बॉस का 'गो टू पर्सन' बनना मुश्किल नहीं है, सिर्फ करना यह होता है कि बॉस द्वारा दिए गए काम को समय पर, साफ-सुथरे ढंग से और परफेक्ट तरीके से करें ताकि बॉस के काम को आप आसान बना सकें।

अपने संवाद कौशल को बढ़ाएं: अगर दफ्तर का महत्वपूर्ण कर्मचारी बनना है तो संवाद कला में माहिर होना भी जरूरी है। बात साफ और संक्षिप्त करें। अपने ई-मेल और मैसेज प्रोफेशनल रखें। लोगों को कोई बात समझानी हो तो इस तरह समझाएं कि उन्हें आसानी से आपकी बात समझ में आ जाए। अगर आपमें यह क्षमता है, तो आप निश्चित ही अपने वर्कप्लेस के महत्वपूर्ण एंप्लॉई हैं।

लोगों से कनेक्ट रहें: प्रोफेशनल लाइफ में भी पर्सनल कनेक्शन बनाना जरूरी होता है। जहां भी रहें, वहां हमेशा महत्वपूर्ण लोगों के साथ अपना एक कनेक्ट डेवलप करें। अगर किसी कंपनी के एक विभाग में काम कर रहे हैं, तो अन्य विभाग के कुलीग्स से भी कनेक्ट करें। ये कुछ ऐसे गुण हैं, जिनके होने पर आप अपने दफ्तर के महत्वपूर्ण कर्मचारी बन जाएंगे।*

आज के डिजिटल दौर में रिश्तों की दूरियां कम करने में तकनीक की बड़ी भूमिका हो गई है। तकनीक, मां और उनके दूर रह रहे बच्चों के बीच संवाद को भी नया आयाम दे रही है। इसके विविध पहलुओं पर एक नजर।

डिजिटल दौर में मिल रहा मां-बच्चे के रिश्ते को नया आयाम

टेक्नो-इंपैक्ट

नम्रता नदीम

एक समय था, जब मां की आवाज घर के आंगन से आती थी, रसोई से आती थी, दरवाजे के पार वाली देहरी से आती थी और चेहरे की झलक से ही सारे स्नेह की भाषा पढ़ ली जाती थी। आज बच्चे पढ़ाई के लिए, नौकरी या बेहतर अवसरों की तलाश में, घर से दूर दूसरे शहर या दूसरे देशों में भी रह रहे हैं। ऐसे में मांएं अपने बच्चों से आधुनिक संचार तकनीक के जरिए ही जुड़ी होती हैं। ऐसे ही तकनीकी साधनों में व्हाट्सएप, वीडियो कॉल और सोशल मीडिया के तमाम दूसरे माध्यम उपलब्ध हैं।

डिजिटल युग में रिश्तों का नया आयाम: आज तकनीक बदल गई है, जीवन जीने का ढंग बदल गया है। डिजिटल युग ने रिश्तों को एक नया आयाम दिया है और इसमें मां का उसके बच्चों के साथ रिश्ता भी शामिल है। वास्तव में सूचना तकनीक ने बच्चों और मां के रिश्तों में अभूतपूर्व बदलाव ला दिया है। आज बच्चे देश-विदेश में कहीं हों, जब उन्हें मां की याद आती है, झट वीडियो कॉल लगा देते हैं और सामने मां दिखने लगती है। मां को सामने देखते हुए बात करने पर लगता है कि जैसे कोई दूरी ही न हो। बच्चों को यह एहसास होता है कि जैसे मां उनके बिल्कुल करीब बैठी, उनसे बतिया रही है। उसके चेहरे की हर भाव-भंगिमा को पढ़ने की सुविधा भी नई तकनीक ने उपलब्ध करवा दी है। आज शहर के साथ-साथ ग्रामीण इलाकों में रहने वाली मांएं अपने बच्चों के साथ सहजता से स्मार्ट फोन चलाती हैं। अपने बच्चों को तरह-तरह के व्हाट्सएप मैसेज भेजती हैं। वीडियो कॉल करके उनके हालचाल पूछना, यह जानना कि खाना खाया कि नहीं, खाना खाया तो क्या खाया? और इस सबको सिर्फ सुनने में ही नहीं अपनी आंखों से भी देखने का सुख मांएं आधुनिक मीडिया तकनीक के जरिए ले रही हैं।

सुकून देता है यह बदलाव: आज के दौर की मांओं का अपने बच्चों के साथ डिजिटल रिश्ता बड़ा दिलचस्प हो गया है। वे इसके जरिए न सिर्फ बच्चों के साथ संपर्क में रहती हैं बल्कि आधुनिक जीवन की सारी जरूरी गतिविधियों को भी सीखती हैं या सीखने की कोशिश करती हैं। मैसेजिंग, इमोजी आदि अभिव्यक्ति के इन नए तरीकों से मांएं भी समृद्ध हो रही हैं और इनके बच्चे भी। जब मांएं और बच्चे एक-दूसरे से ऑडियो कॉल पर बात करते हैं, उस समय मां का 'मैं ठीक हूं' कहना और वीडियो कॉल पर 'हां, मैं ठीक हूं' कहने में फर्क होता ही नहीं दिखता भी है। वीडियो कॉल में साफ दिखता है कि मां वाकई ठीक है या नहीं। यह तकनीकी बदलाव सुकून देता है, क्योंकि भले मां और उसके बच्चे के बीच दूरी हो, लेकिन भावनाओं का जुड़ाव इस दूरी के बाद भी डिजिटल तकनीक के जरिए बना रहता है।

ऐसे में बच्चों का भी फर्ज बनता है कि जब वे मां से बात करें तो सिर्फ उसमें शब्द ही न हों या सिर्फ संदेश ही न भेजे जाएं बल्कि मां से बात करने के जरिए अपनी उपस्थिति को भी व्यक्त करें। उन्हें बिना किसी कारण और बिना किसी अनुमान के फोन करें और देर तक बातें करें। इससे मां को बहुत खुशी मिलेगी।

मेल-मिलाप भी है जरूरी: अगर मां आधुनिक डिजिटल तकनीक से पूरी तरह अनभिज्ञ हो, तो कई बार उनके लिए यह बदलाव जटिल हो जाता है। उन्हें व्हाट्सएप्प यूज करना या वीडियो कॉल करना उलझन भरा लग सकता है। इन तकनीकों का उपयोग आज भले ही आम हो गया है, लेकिन मां की भावनाएं अब भी पारंपरिक हैं। देखा जाए तो तकनीक ने संवाद को चाहे जितना आसान बनाया हो, लेकिन संवाद की गइराई को कम कर दिया है। मांएं अपने बच्चों के साथ गहरा भावनात्मक जुड़ाव चाहती हैं। मां-बच्चे का भले ही लगातार फोन से संपर्क बना रहे। इस फोन से रिश्तों का कारवां भले ठीकठाक चलता दिखे, लेकिन मां-बच्चे के इस रिश्ते में वास्तविक मेल-मिलाप बहुत जरूरी होती है। तकनीक चाहे जितनी जीवंत लगे, मां के साथ साल में कुछ दिन जरूर गुजारें। इससे इस डिजिटल दौर में मां और आपके बीच रिश्तों की ऊर्जा जीवंत बनी रहेगी। यानी तकनीक का उपयोग करने पर भौतिक संपर्क की महत्ता को अनावश्यक मानना गलत है। इसलिए जब आप वास्तव में अपनी जॉब या पढ़ाई की वजह से दूर हों तब तो तकनीक का यूज ठीक है लेकिन मौका मिलने पर मां से जरूर मिलें।*

तकनीक से मिलता है मां को सुकून

- विभिन्न सर्वेक्षणों के दौरान यह देखा गया है कि 99 फीसदी मांएं घर से बाहर रह रहे अपने बच्चों से हर दिन बातें करती हैं। इनमें से करीब आधी तो हर दिन एक बार वीडियो कॉल भी करती हैं।
- जब मांएं डिजिटल तकनीक के जरिए बच्चों से वीडियो कॉल के जरिए बात करती हैं, तो वह सिर्फ उनका चेहरा भर नहीं देखतीं, उनकी खुशी, उनका दुःख, उनकी सेहत सब कुछ वो देख लेती हैं, इससे उन्हें सुकून और तसल्ली मिलती है।

मातृ दिवस विशेष

सिने ट्रेंड

हर्ष

हिंदी फिल्मों और फिल्मी गीतों में मां के महत्व को खूबसूरती और प्रमुखता से उभारा जाता रहा है। खासतौर पर फिल्मों में मां पर केंद्रित कई ऐसे हृदयस्पर्शी गीत रचे गए हैं, जो सीधे दिल में उतरते हैं। मां पर केंद्रित दिल को छू लेने वाले ऐसे ही कुछ फिल्मी गीतों पर एक नजर।

मां को समर्पित गीतों से गुलजार है बॉलीवुड

मां और बच्चे का संबंध बीज और वृक्ष के संबंध जैसा गहरा, विस्तृत और अविवेचनीय होता है। इसलिए मां और बच्चे के बीच अनोखे रिश्ते को शब्दों में व्यक्त कर पाना आसान नहीं है। फिर भी बॉलीवुड फिल्मों में अनेक गीतकारों ने समय-समय पर इस अनोखे प्यारे रिश्ते को अपने भावपूर्ण गीतों में व्यक्त किया है।

तुझे सब है पता, है न मां: प्रसून जोशी का लिखा और शंकर महादेवन का गाया गाना *'तुझे सब है पता, है न मां..'* फिल्म 'तारे जमीन पर' का है। यह गीत हर किसी के दिल को छूता है। जैसे यह गीत न हो हर बच्चे के दिल से निकली आवाज हो। हम सब ऐसे ही तो होते हैं बचपन में, जो बात अपनी मां से किसी कारणवश नहीं कह पाते उस बात को भी हमारी मां जान लेती है। भूख लगने पर हमें क्या खाना है, यह हमसे बेहतर हमारी मां को पता होता है। हमारी खुशी-गम, डर-चिंता, पसंद-नापसंद सब से वाकिफ होती है हमारी मां। *'मैं तुझे बतलाता नहीं, पर अंधेरे से डरता हूं मैं मां/तुझे सब है पता, है न मां'* एक बच्चे की मासूम पुकार है यह गीत, जो हर मां की रूह तक पहुंचता है।

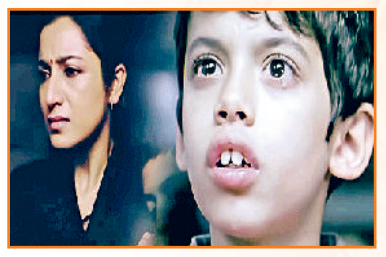

फिल्म 'तारे जमीं पर'

फिल्म 'रंग दे बसंती'

तू कितनी अच्छी है, तू कितनी भोली है: 'राजा और रंक' फिल्म का यह गीत *'तू कितनी अच्छी है, तू कितनी भोली है..'* अभिनेत्री निरूपा राय और बाल कलाकार महेश कोठारे पर फिल्माया गया है। लता मंगेशकर की मनमोहक आवाज ने गाने के बोल में मां के लिए प्रयोग किए गए प्रतीकों और शब्दों को और भी मुलायम और हृदयस्पर्शी बना दिया है। मां असल में क्या होती है, उसकी विशाल हृदयता और उसकी ममता की उदात्तता को इस छोटे से गीत में समेट कर गागर में सागर भर दिया गया है। आनंद बख्शी के लिखे इस गीत को संगीतबद्ध किया है संगीतकार जोड़ी लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने।

फिल्म 'राजा और रंक'

तेरी उंगली पकड़ के चला, ममता के आंचल में पला: 'लाडला' फिल्म का गीत *'तेरी उंगली पकड़ के चला, ममता के आंचल में पला..'* एक बेटे की भावुक स्वीकारोक्ति है। वह स्वीकार करता है कि जीवन पथ पर उसकी मां ने उसे चलना सिखाया। जीवन के इस सफर में मिलने वाली धूप से बचाने के लिए हर वक्त मां ने उसे अपनी ममता की छांव तले सहेज कर रखा। मां के बिना उसका जीवन कुछ भी नहीं। मां और उसके बेटे के बीच मधुर रिश्ते की चाशनी में

फिल्म 'लाडला'

छनकर निकला यह गीत जितना अर्थपूर्ण है उतना सुरीला भी। यह गीत फरीदा जलाल और अनिल कपूर पर फिल्माया गया है। समीर के लिखे इस गीत को उदित नारायण और ज्योत्सना ने अपनी आवाज दी है।

लुका छुपी बहुत हुई, सामने आ जा ना: फिल्म 'रंग दे बसंती' में प्रसून जोशी का लिखा गीत, *'लुका छुपी बहुत हुई, सामने आ जा ना..'* बेटे की मौत पर एक मां की व्याकुलता और ममता को एक साथ जोड़ने का कमाल करता है। गीत में मां अपने बेटे से संवाद करते हुए कहती है, *'लुका छुपी बहुत हुई/सामने आ जा ना/कहां-कहां ढूंढा तुझे/थक गई है तेरी मां'*।

गीत के दृश्य में बेटे की चिता सामने जल रही है और मां इस सदमे से अपनी सुध-बुध खो बैठती है। उसके कलपते हृदय से बोल निकल रहे हैं- *'आजा सांझ हुई मुझे तेरी फिकर/धुंधला गई देख मेरी नजर आ जा ना।'* आंखों को नम कर देने वाले इस भाव पूर्ण गीत को गाया है स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर और एआर रहमान ने।

मां जैसी दुनिया में है कोई कहां: गीतकार अंजान का लिखा और किशोर कुमार का गाया लोकप्रिय गीत *'मां जैसी दुनिया में है कोई कहां..'* फिल्म 'पांच कैदी' का है। इस गीत के जरिए यह भाव प्रकट किया गया है कि मां जैसा दुनिया में कोई नहीं हो सकता। इसीलिए मां को धरती पर साक्षात ईश्वर का स्वरूप माना जाता है। इसीलिए तो मां का स्थान सबसे ऊपर माना जाता है। इन सभी भावों को इस गीत की आगे की पंक्तियों में बड़ी ही खूबसूरती से पिरोया गया है, *'मां तो है मां/मां तो है मां/मां जैसी दुनिया में है कोई कहां/ओ मां ओ मां//मां तू ही मंदिर/मां तू ही पूजा/पूजा का वरदान मां/ये लोक तू है/परलोक तू है/तुझमें है दोनों जहां।'*

फिल्म ' पांच कैदी'

ऐ मां, तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी: मां को भगवान के समतुल्य मानने वाले भावों को वर्ष 1966 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'दादी मां' के एक गीत में भी व्यक्त किया गया है। उस गीत के बोल हैं *'ऐ मां, तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी। उसको नहीं देखा हमने कभी पर इसकी जरूरत क्या होगी..'* मजरूह सुल्तानपुरी के इस भावपूर्ण गीत को संगीत से संवारा था रोशन ने और अपनी आवाज दी थी, महेंद्र कपूर और मन्नाडे ने।*